आम का बगीचा

आम का बगीचा

एण्टन चेखव के प्रसिद्ध नाटक

चैरी आर्चड का

वीरेन्द्र नारायण द्वारा भारतीय रूपान्तर

मेरा तो विश्वास है
कि जो कुछ मैं लिखना चाहता था
और जिस उत्साह से
मैं लिख सकता था—
उन सबके मुकाबले आज तक
जो कुछ भी
मैंने लिखा है सब बेकार है।
मेरे दिमाग म
एमे लोगो—चरित्रो की पूरी पलटन भरी है
जो दिन रात अपनी मुक्ति के लिए
प्राथना करते रहते हैं कि
मैं एक श   कह दू
और व निकल पडें।
मुझे बडा दुःख होता है जब
देखता हू कि आज तक मैंने
जिन "यक्तियो पर लिखा है
वे सब कूडा हैं
जबकि अच्छे से अच्छे विषय
मेरे मस्तिष्क के कूडाघर म पडे
सड रहे हैं
—एण्टन चेखव
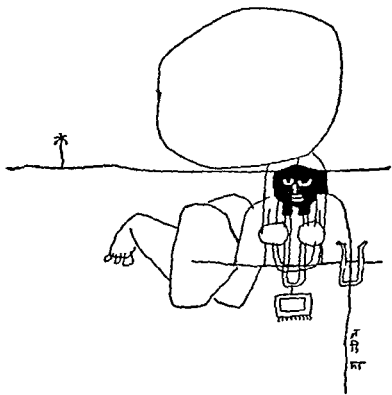
मुझे कुछ कहना है

'आम का बगीचा' एक समस्या-नाटक है, एक साथ कई स्तरों पर।

आज के नाटकों की बात छोड भी दें तो अपने समकालीन नाटको के परिवेश मे भी इस नाटक का, वस्तुत ऐंटन चेखव के सभी नाटको का वही स्थान है। और उन नाटकों मे अग्रणी है चेखव का 'द चेरी आर्चड'।

चेखव की मृत्यु हुई 1904 ई० मे। उस समय यथार्थवादी नाटकों का बोलबाला था जिसके प्रणेता थे इब्सन। चेखव ने अपने नाटकों का वही ढाचा रखा—यथार्थवादी। लेकिन इसके साथ ही चेखव ने कोरे यथार्थवाद को कविता की महिमा से मडित किया और इसके लिए ऐसा रास्ता चुना जो भावुकता

से बिलकुल अछूता था।

'आम का बगीचा' या इसका मूल रूप 'द चेरी आचड' पढ जाइए तो आपको लगेगा कि रोजमर्रा की घटनाओ पर आधारित बदरग लोगो का चित्रित करता हुआ यह नाटक तत्कालीन समाज के मानसिक पतन का ही एक रूप प्रस्तुत करता है। ऐसा लगगा कि भविष्य के प्रति आस्था, शक्ति और पराक्रम की सार्थकता को झुठलाता हुआ यह नाटक एक प्रकार के श्लथ अवसाद से जकड लेता है।

लेकिन बात बिल्कुल उल्टी है।

समाप्त होती हुई बिखरती हुई सामाजिक व्यवस्था का चित्रण चेखव करता है लेकिन उसके साथ ही सौ, दो सौ, हजार वर्षो के बाद के उज्ज्वल भविष्य की ओर भी उतना ही सशक्त सकेत करता है।

आज यह भी कहा जा सकता है कि इस देश म ऐसे नाटक की साथकता क्या है। यह स्पष्ट कर देना चाहूगा कि एक साहित्यिक रूपातरण की मेरी मशा कभी नही थी और बरसो पहले रूपातरित यह नाटक प्रकाशन के लिए तभी आया है जब इसका मचन कर चुका हू। भारत का आज का वातावरण उसी घुटन और सडाध से भरा है जो क्राति के पहले रूस को दबोचे था। सामतवाद न अभी भी दम नही तोडा। कितन दिना की बात है कि दास प्रथा को समाप्त करने के लिए कानून बनाना पडा? इसलिए भारत के आज के परिवेश म इसकी स्वाभाविक साथकता है।

लेकिन यह भी सत्य है कि वप का कोई दिन ऐसा नही बीतता जब चेखव के नाटक दुनिया म कही-न कही न खेले जात हो। पश्चिम की सामाजिक स्थिति तो बिल्कुल बदल गयी है। फिर भी इस नाटक का आकपण क्या है इसकी आज वहा साथकता क्या है?

मेरी समझ मे चेखव न एक विलक्षण निष्पक्षता और दूरदर्शिता अपनाई है जो उसकी कृतिया को आज भी इतना आकपक बना देती है। जब ढहती हुई सामाजिक व्यवस्था का वह चित्रण करता है तो उसे कोसता नही है। दोना तरह के लोगो की प्रतिक्रिया सामने रखता है, जो उससे चिपके हैं

और जो उसे ममाप्त करना चाहते हैं। जब भविष्य की ओर किमी पात्र से सकेत कराता है तो उसे सवगुणसम्पन्न धीरोदात्त नही बनाता। उसकी खामिया को भी सामने रखता है। और इन सबके पीछे उसकी गहरी ममता स्पष्ट झाकती है। लेकिन इसमे उसका सकेत कमजोर नही पडता। इससे उमका कथ्य फीका नही हो जाता। मभी कुछ कह चुकने के बाद भी वह पाठक या दशक की अपनी स्वतत्रता नही छीनता। चेखव के अपने ही शब्दो म —

'यह अच्छा आदमी है और दूसरे भी बुरे नहीं है। उनका जीवन सुदर है और उनकी कमजोरिया पर प्यार भी आता है, हमी भी। लेकिन इन सबके बावजूद यह सब बेजरूरत है, एकरस है बेजान है। ऐसे म काई क्या करे? जरूरत इस बात की है सभी एक साथ मिलकर इस बदल दें, अच्छे जीवन के लिए कोशिश करें।'

चेखव की तकनीक म विरोधी तत्वो का यह विलक्षण प्रयोग हुआ है। जिसे नष्ट करना है जिसे पीछे छोड देना ह, भूल जाना ह उसकी कमजोरिया पर हमना और उसे प्यार करना चेखव की कला है। न तो वह प्यार करना भूलता है और न उस छोडकर आगे बढना। पश्चिम के लिए कलात्मक सजन का यह मानदड चाहे जितना अटपटा और उलझाने वाला लगे, भारतीया के लिए यह सहज ग्राह्य होना चाहिए क्योकि इमी दश न पहले-पहल अधनारीश्वर की कल्पना की थी।

'द चेरी आचड से 'आम का बगीचा' तक एक लम्बा रास्ता है। विश्व के सभी नाटककारो म चेखव ही मेरे हृदय के निकटतम हैं। और उनके नाटको म 'द चेरी आचड मुझे सबसे प्यारा लगता है। शायद इसका एक कारण यह भी रहा हो कि अपनी शिक्षा के दौरान 'द चेरी आचड' का अभिनय करन का मुझे मौका लदन म मिला और मेरे निर्देशक थे प्रसिद्ध माइकल मकओवन। इसके अलावा भी एक कारण है। एक तरह के ऐसे ही मिथ्याभिमान से चिपके मेरे दादा भी थे। ऐसे पात्र अभी भी जीवित हैं कम से कम विहार के बहुत सारे हिस्सो में। इसलिए इन पात्रा का चरित्र

अलग कर दू तो ऐसे व्यक्तित्व वाले लोग आज भी दिखाई देते है जिन्हे मैं जानता पहचानता हू।

इस सबध मे 'चरित्र' और 'व्यक्तित्व' का स्पष्टीकरण जरूरी लगता है क्योकि आगे विशिष्ट अर्थ मे ही इनका प्रयोग किया जायगा। किसी भी पात्र का जो ऊपरी ढाचा है, किसी भी व्यक्ति का जो सामाजिक रूप है मैं उसे चरित्र मानता हू। और उसके भीतर जो है वह है उसका व्यक्तित्व जिसकी ओर चरित्र द्वारा सकेत किया जाता है। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए प्रसाद के नाटको से उदाहरण दू। स्कदगुप्त, चद्रगुप्त और मनु के चरित्र अलग-अलग है। पर उनका व्यक्तित्व एक ही है जिसका सबसे अच्छा चित्रण मनु मे ही हुआ है।

ऐसे लोगो को जानता पहचानता था इसलिए अनुवाद शुरू किया। पात्रो का भारतीयकरण कोई समस्या नही थी लियुबाव आन्द्रेईव्ना सुजाता बनी। गायेव रणवीर बना। रूसी नामो की एक विशेषता है। एक ही व्यक्ति के बडे छोटे कई नाम होते है। कोशिश की। लेकिन वह मोह छोडना पडा।

कई जगह समझौता भी करना पडा। चेरी और मीच के फूल प्रेम के द्योतक है। विदेशी साहित्य मे प्रेमी प्रेमिका को 'चेरी ब्लासम' या 'मीच ब्लासम' भी कहता है। उस ध्वनि को आम की मजरियो मे पकडना सभव नही था हालाकि कामदेव की पूजा मे आम की मजरियो का प्रयोग शास्त्रोक्त है। लेकिन व्यावहारिक जीवन मे वह ध्वनि नही निकलती। पता नही चेखव के ध्यान मे भी यह बात रही या नही।

यही बात गिटार और मडोलिन के साथ हुई। गिटार बजा कर गीत गाया जाता है। प्रेम के गीत बहुत प्रभावी होते हैं। पश्चिम मे इसकी परम्परा भी है। इसकी जगह एकतारा और तानपूरा रखना पडा एकतारा भजन के साथ बजाया जाता है और तानपूरा शास्त्रीय सगीत के साथ। प्रेम के गीतो का इनके साथ सबध नही।

अपने मे ये चाहे बडी बात न लगें पर चेखव जैसे कुशल कारीगर मे

इतना हरफेर भी विशिष्ट अर्थ रखता है जिसकी चर्चा आगे की जायगी।

इस तरह रूपान्तरण तो तैयार हो गया लेकिन मचन के लिए लगभग पन्द्रह वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। रणवीर, सुजाता आदि चरित्रों और व्यक्तित्वों को मैंने तो देखा था। लेकिन रंगमंच व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं। उसी विश्वास वाले अभिनेता-अभिनेत्री न मिलें तो प्रयोग किया ही नहीं जा सकता। संयोग की ही बात कि गीत और नाटक प्रभाग की ओर से इसे मंचस्थ करने का सुयोग मिला।

मंच की चौथी काल्पनिक दीवार जो मंच और प्रेक्षागृह को अलग करती है, इस तरह के नाटकों के लिए बड़ी सशक्त है। अभिनय के किसी भी क्षण में दर्शकों की उपस्थिति की ओर अभिनेता को ध्यान नहीं देना चाहिए। इसके विपरीत लोक रंगमंच की अपनी तकनीक है जिसमें यह चौथी दीवार नाम के लिए रह जाती है। अभिनेता दर्शकों से सीधी बात करता है। पिछले दशक में हिन्दी रंगमंच पर लोक शैली से प्रभावित नाटकों का एक सशक्त दौर आया जिसने यहाँ के अभिनेताओं को भी प्रभावित किया। इस प्रभाव को भुलाना मेरी सबसे बड़ी समस्या थी।

इस नाटक की माँग यहीं तक सीमित नहीं थी। इसमें लगभग सभी पात्र एक साथ कई धरातल पर जी रहे होते हैं। उनकी आपसी बातचीत कभी कभी असंगत लगती है। अभिनेताओं को एक प्रकार की उलझन होती है। अमुक ने यह बात कही। जवाब में यह वाक्य किस तरह कहा जा सकता है। नाटक के प्रारंभ में ही मानिया और जगन्नाथ प्रवेश करते हैं। दोनों अपनी दुनिया में हैं। मानिया अपनी बात करती है। जगन्नाथ अपनी बात। मानिया कहती है। गंगाधर राम मुरम शादी करना चाहता है। जगन्नाथ हूँ कहकर पानी पीता है। सामान्य नाटक की तरह का संवाद पहली बार तब सुनाई पड़ता है जब जगन्नाथ कहता है— क्या बात है मानिया अपनी जगह दा !"

इस तरह के अभिनय के लिए यह आवश्यक है कि सारे अभिनेता पात्रों को इतनी अच्छी तरह समझ लें कि उनकी मानसिक प्रक्रिया गहराई से मे

आत्मसात हो जाये अन्यथा एक प्रकार का वल लगाना पडगा जो नाटक के लिए घातक होगा। प्रसिद्ध अभिनेता और निर्देशक स्तानिस्लास्की न पहली वार द चेरी आचड' प्रस्तुत किया था। उसी के शब्दा म —

द चेरी आचड के मचन म बडी कठिनाइयो का सामना करना पडा। और इसम अचरज भी क्या। काम ही इतना कठिन था। फूल की ही तरह इसकी मोहकता इसकी छिपी सुगध म थी। इस सौरभ का पान के लिए कली के विकसित होन तक प्रतीक्षा करनी पडती है। जोर लगा कर कली की पखुडिया अलग कर दें फूल मर जाता है।

और इस समय रगमच की स्थिति ऐसी थी कि सभी कुछ जोर देकर वल लगाकर कहा जाता था। पढते समय एक वाक्य अगर महत्त्वपूण लगा तो मच पर उसी वाक्य को जोर देकर, वल लगाकर कहा जाता है। विशिष्ट नाटको के लिए यह शैली कारगर होती है। लेकिन 'आम का वगीचा' के लिए यह घातक थी। अभिनेता को दर्शक की ओर से सोचने की कोई जरूरत नही। दशका की उपस्थिति से पूणतया अनभिज्ञ अभिनेता जितना सहज हो सके, उसका अभिनय और सभाषण उतना ही प्रभावी होगा। अभिनेताओ को सत कवियो जैसी सहज प्रणाली और अभिव्यक्ति अपनानी होगी। कबीर की ही तरह दर्शन की गहन सूक्तिया कहनी पडेंगी और इस तरह कहनी पडेंगी कि दर्शन की गध तक न आये।

इस तरह अभिनेताओ को दो तरह से सावधान रहना चाहिए—अपनी दुनिया मे डूबे रहे और सभाषण को सहज रूप स कहते जाय। इसका अथ यह नही कि सभाषण मे नाटकीय वल का अभाव है। इसका सिफ यह अथ है कि नाटकीय वल के लिए लेखक ने जो तकनीक अपनायी है, अभिनय शली उसी के अनुरूप रहे ताकि नाटक का स्वाद उभर सके। सुजाता कहती है 'मुझे भी इसके साथ बिक जाने दो!' आम के वगीचे के साथ, उससे जुडे हुए जीवन के साथ वह इस तरह अभिन्न हो गई है कि उसके बिना जीवन की कामना भी नही कर सकती। लेकिन जब आम का बगीचा बिक जाता है तो वह आत्महत्या नही करती। फिर अपन प्रेमी के पास जाने की तैयारी

करती है। जीवन नय सिरे से शुरू हो जाता है। यदि अधिक बल देकर सुजाता कह तो नाटक के अत म उसका व्यक्तित्व ही बिखर जाएगा और सुजाता के लिए उसका निर्वाह कठिन हो जाएगा। रणवीर कहता है—बैंक वाले मुझे पद्रह सौ की नौकरी द रहे है। सुजाता कहती है—तुम भला नौकरी क्या करोगे ? लेकिन नाटक के अत म रणवीर वह नौकरी कबूल कर लेता है। इस तरह के अनेको उदाहरण मिलेंगे।

अभिनय की इस विशिष्टता के बाद पात्रो का विश्लेषण।

सुजाता—अधेड उम्र की विधवा। पुराना प्रतिष्ठित परिवार। लेकिन एक प्रतिष्ठा के अलावा अब कुछ भी शेप नही रहा। कज लेकर जी रही है। पुरानी आदतें नही छूटती। रस्सी जल गई है लेकिन ऐंठन नही गइ।

जानती है कि उसका प्रेमी उसे धोखा दे रहा है। लेकिन फिर भी उससे छुटकारा नहीं पाना चाहती। पुराना घर, आम का बगीचा, पुरानी जिंदगी से बेपनाह लगाव है लेकिन नई आदतें, नई जरूरतें भी अपना लेती है।

भाई रणवीर सिंह की नजर म प्यारी प्यारी भोली नेक और अच्छी बहन। लेकिन नतिक दृष्टि से जरा ढीली-ढाली। बेटी काति की नजर म ममतामयी मा जिसकी हालत वह खूब समझती है। छोटा भाई रोहित नदी मे डूब गया। पिता का देहात हो गया। कज का सूद तक नही चुकाया जा सका। और इन सबको हिम्मत मे झेलती हुई एक अधेड विधवा—काति की नजर म हिम्मत वाली, साहसी फजूल खच लेकिन नेक और बडी प्यारी। अनिल की नजर म एक बेवकूफ लेकिन भली औरत जिसकी लडकी से वह प्रेम करता है और जो व्यथ ही एक नष्टप्राय सामाजिक व्यवस्था स जुडी हुई है तथा जुडी रहना चाहती है।

रणवीर—अमीर बाप का बेटा। पढा लिखा, सभ्य। उसे अपनी ही आवाज से प्यार है। मौके-बे मौके लेक्चर शुरू कर देता है। लेकिन टोकने पर बुरा नही मानता। रईसी की आदतो से मजबूर है, पुरान मूल्यो से बधा है। सस्ते सेंट मे नफरत करता है लेकिन किसी व्यक्ति के प्रति आक्रोश या घृणा नहीं रखता।

स्थानीय किसानो की नजर म वडा ही नक और भला। बहन की नजर मे प्यारा भाई जो हर कष्ट और मुसीबत म साथ देता है। जगन्नाथ की नजर म 'बुद्धिया'। अनिल की नजर म उसकी प्रेमिका काति का नक लेकिन बेवकूफ मामा।

काति—पढ़ी लिखी जवान लडकी। जवानी की सभी खूबियो और खराबियो के साथ। एक परिवार म पली। उसका असर स्पष्ट। बवई म पाचवी मजिल पर रहना कल्पना के भी बाहर। खुली हवा और बडी हवेली मन के अनुकूल। लेकिन भविष्य के प्रति सजग।

अपने प्रेमी अनिल की बातो का सहज विश्वास और उसी विश्वास के सहारे अपनी मा का भी सहारा देने की कल्पना। नई जिन्दगी के लिए एक पुलक भरी उत्सुकता। जीवन को जवान आखो स देखने का साहस और क्षमता। प्रेम के लिए सजग लेकिन प्रेम को जीवन म सही स्थान देने की चेष्टा। भविष्य की समूची परिकल्पना म कोरी कल्पना और भावुकता या यथार्थता का एहसास?

कल्याणी—कौन है कहा से आयी उसे स्वय पता नही। सुजाता के परिवार म रख ली गई ताकि काति के साथ साथ पूरे परिवार का मनोरजन हो सके। वह जादू के खेल जानती है वह गाना और नाचना जानती है। सिर्फ यह नही जानती कि वह क्या जिन्दा है।

वह इस अनभिज्ञता के प्रति जागरूक भी है। लेकिन किसी भी तरह की हायतौबा नही मचाती। इसे भी उसी सहज भाव से अगीकार करती है और स्वय अपनी जिन्दगी को तीसरे व्यक्ति की नजर से देख सकती है।

जगन्नाथ—गाव के बनिये का लडका। बाप बहुत पीटता था। लेकिन व्यापार की सहज बुद्धि ने उसे बहुत ही धनी बना दिया। उसी बुद्धि ने आम का बगीचा खरीदने के लिए उकसाया ताकि उसे छोटे छोटे टुकडो म किराया लगाया जा सके या बेचा जा सके।

पैसा हो गया लेकिन पसेवालो के ठस्से से अनभिज्ञ सीधा सादा कोरा ग्रामीण।

प्रेम करता है। लेकिन नही जानता कि प्रेम निवदन किस प्रकार किया जाता है। अतन उत्तला के प्रति उसका निवेदन अधूरा ही रह जाता है। जब भी ऐसे मौके आते है, किसी न किसी तरह अपनी व्यापार बुद्धि के चक्कर म पडकर वह बात का अनकही छोड देता है, कहने का साहस नही वटोर सकता या मौका समय नही पाता।

गदाधर—सुजाता के परिवार का पटवारी जो परिवार की प्रतिष्ठा के लिए ही बना है। आया सोनिया से प्रेम करता है। लेकिन उसके जीवन का एक दृष्टिकोण बन गया है कि प्रतिदिन उसके साथ कोई न-कोई अप्रिय घटना घटती ही रहती है। इसी एक राग को वह हमेशा अलापता रहता है।

पहले तो सानिया उसकी तरफ आकृष्ट होती है। लेकिन तिनकौटी के आने पर जब सोनिया तिनकौडी की ओर चुकती है तो इसे भी एक अप्रिय घटना समझकर वह सताप कर लेता है। अपन को अभिव्यक्त करन के लिए वह एकतारा पर गाना भी गाता है और मान लेता है कि प्रेमिया क लिए यही तानपूरा है।

गोवधन - किसी जमाने म धनी और सम्पन्न था। लेकिन आजकल काई काम नही करता। कज पर जीता है और सूद की रकम चुकाने के लिए फिर कज लता है।

गठिया और रक्तचाप का मरीज है। लेकिन शरीर से बल की तरह मोटा और ताकतवर है।

उसका विश्वास है कि कोई-न कोई रास्ता उसके लिए निकल ही आयेगा। एक बार जब हालत खस्ता हो गई थी तो उसकी जमीन रलन ने खरीद ली। इस बार भी उसकी एक बजर जमीन में कोयले की खान निकल आई।

उसकी लडकी पढ़ी लिखी है। उसमे सुन-सुन कर उसने बहुत सारी बातें याद कर ली हैं—दाशनिको के नाम, दशन के सिद्धात। लेकिन यह झूठ नही बोलता। पूछने पर साफ़ कह देता है कि उसकी लडकी न ये किताबें पढी हैं। उसन नही।

गोवर्धन स्वय अपने बारे म कहता है—पूरा बैल, लेकिन भला आदमी।

तिनकौडी—सुजाता देवी का बावर्ची उनके साथ ही रहता है जहा जाती हैं उसे साथ ले जाती हैं। पाच वर्षों तक सुजाता के साथ बाहर रहा है। उसे बम्बई से प्यार हो गया है। यहा आकर उसका दम घुटता है।

आते ही सोनिया का देखता है। सोनिया उसके बम्बइयापन पर दीवानी है। वह चिपक जाने के लिए आतुर है। इसके साथ ही तिनकौडी को झटका लगता है। उसका बम्बई का अनुभव है कि पहले लडकी को ना-ना कहना चाहिए और अत तक ना-ना ही कहते रहना चाहिए। जो लडकी इस तरह सहज ही अक मे समा जाय तिनकौडी का अनुभव कहता है कि वह आवारा है। वह सोनिया से किनाराकशी करने लगता है।

तिनकौडी की दूसरी कमजोरी है कि वह पेटू है। आखिर बावर्ची ठहरा।

अनिल कुमार 'अनल —क्रातिकारी छात्र है। लगातार कई वर्षों से पढ रहे है। लेकिन पढाई खतम नही होती। पता नही राजनीतिक कारणो से कालेज नही छोडना चाहते या पढाई लिखाई म कमजोर है।

इस परिवार स पुराना सबध है। सुजाता के लडके रोहित को पढाते थे। काति से प्रेम भी करने लगे। लेक्चर देना अच्छा लगता है। राजनीतिक चेतना है और सुनहरे भविष्य पर पूरी आस्था। साथ ही अपने को प्रेम जैसी ओछी चीज से बहुत ऊपर मानते हैं। उन्हे शिकायत है कि उत्पला बेकार पीछे पडी रहती है। भला वह काति को प्रेम जाल म फासने जसी ओछी बात सोच भी सकते है लेकिन जब सुजाता गुस्से म बखिया उधेडती है तो जवाब बन नही पाता और सारे नाते तोडकर जाने के लिए तयार हो जाते हैं।

आम का बगीचा बिक जाता है तो सुजाता के लिए साहस और आस्था के स्वरा म अनिल और काति का स्वर ही प्रमुख होता है। और दरअसल स्वर अनिल का ही है काति का स्वर उसकी अनुगूज है।

रामनाथ—परिवार का पुराना नौकर है। बहुत बूढा हो गया है। कुछ याद नही रहता। यो ही बुदबुदाता रहता है। अतीत की उसकी दुनिया म

उसे कभी कुछ ऐसा याद आ जाता है जो प्रसग के साथ ठीक बैठता है। कभी ऐसा भी याद आता है जो अप्रासगिक होता है। यही स्थिति उसके सुनने की है।

सभी कोई कहते हैं कि उसे अब मर जाना चाहिए। वह भी स्पष्ट स्मृति के क्षणो म महसूस करता है कि बहुत दिनो से जी रहा हू। नाटक के अत म उसे छोडकर जब सभी चले जाते है तो वह अपना जायजा लेता है—थक गया। विश्राम करना चाहिए। लगता है कि इस वतन म कुछ था ही नही। तुम पागल हो।

रामनाथ जसे घिस घिसकर समाप्त हो जाता है। इसके लिए स्वय उसके मन मे भी किसी तरह का अफ्सोस या दुश्चिता नही है। सुबह सूरज निकला था, शाम को ढल गया।

उत्पला–सुजाता के परिवार की देखरेख के लिए रखी गई है। गृहस्थी वही चलाती है। चाभियो का गुच्छा उसी के पास रहता है। नौकरो की देखभाल भी उसी का जिम्मा है। कान्ति की हमउम्र होने के नाते उसके निकट है लकिन अपनी जगह पहचानती है।

जगन्नाथ चौधरी से वह प्रेम करती है। लेकिन उसकी शिकायत है कि वह बहुत कामकाजी आदमी है, उसे किसी के लिए फुरसत नहीं परवाह नही। हालाकि जगन्नाथ चौधरी भी उससे प्रेम करता है। लकिन जिस तरह का प्रेम निवदन या प्रेम प्रदर्शन देखकर उत्पला को विश्वास हो जाता वह नही मिलता। उत्पला दुविधा म ही रह जाती है।

मोनिया—गाव की लडकी, सुजाता देवी के घर आया। अभी-अभी जवान हुई है। सुजाता देवी के घर रह कर उसने तौर-तरीके सीख लिए हैं। वह समझती है कि उसे प्रेम भी करना चाहिए। आखिर सुजाता देवी प्रेम करती है। कान्ति प्रेम करती है। अपना दिल हथेली पर लिए वह घूमा करती है। कभी गदाधर को दे देना चाहती है, कभी तिनकौडी को। कभी तबला वाला छेडता है 'गुलाब की कली' तो सपनो की दुनिया म खो जाती है—नाजुक, गुलाब की कली।

किशोरावस्था की उत्सुकता को सुजाता के घर के खुले वातावरण ने परवान चढ़ा दिया है। लेकिन सोनिया सस्ती बाजारू लड़की नहीं है। नादान और भोली है।

पात्रों की इस छोटी रूपरेखा के बाद समस्या आती है सेट की। नाटक के चार अंक हैं। पहले अंक का सेट है नर्सरी। दूसरा अंक मकान के पीछे का उजाड़ हिस्सा है। तीसरा अंक है बैठक खाना और चौथा अंक है फिर नर्सरी। यानी प्रत्येक अंक के बाद सेट बदलता है।

आम का बगीचा पढ़कर ऐसा लगता है कि यथार्थवादी सेट के बिना नाटक नहीं खेला जा सकता। बात ठीक भी है। लेकिन ये सेट कैसे हों, कितने विस्तृत हों इस संबंध में स्तानिस्लावस्की और चेखव की उक्तियाँ ही सबसे अच्छा स्पष्टीकरण कर पायेंगी। स्तानिस्लावस्की ने अपनी किताब माइ लाइफ इन आर्ट में लिखा है —

उन दिनों अभिनेताओं के अभिनय को सँवारने की हमारी क्षमता हमारी आंतरिक तकनीक बड़ी ही प्रारंभिक अवस्था में थी। नाटक की आंतरिक अर्थ समष्टि को पकड़ने के लिए कौन से रास्ते चुनने चाहिए हम जानते नहीं थे। इसलिए अभिनेताओं की मदद के लिए हम लोगों ने बड़े ही प्रभावी सेट और ध्वनि और प्रकाश के प्रयोग किए थे।'

'सुनो, चेखव ने किसी और से कहा लेकिन इस तरह कि मैं भी सुनूँ, "मैं एक नया नाटक लिखूँगा और पहला वाक्य होगा कैसी अद्भुत कैसी शांति। चिड़िया नहीं, कुत्ते नहीं उल्लू नहीं कोयल नहीं, घड़ी नहीं, ढोर डंगर की घंटियाँ नहीं, झींगुर नहीं।

यह ताना मुझ पर था।

स्पष्ट है कि सेट और ध्वनि तथा प्रकाश के प्रभावों में बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। नाटक की दृष्टि से यह बिल्कुल ठीक है क्योंकि सारे पात्र अपनी ही दुनिया में जीते हैं और उनका संभाषण बहुत अंशों में अंतर्मुखी रहता है जिसे बल देकर मंच पर कहा नहीं जा सकता। यदि मंच पर अपेक्षाकृत शांति न हो तो इन संभाषणों के दब जाने की आशंका है।

पहला और चौथा अंक
ग्राउंड प्लान
एलिवेशन
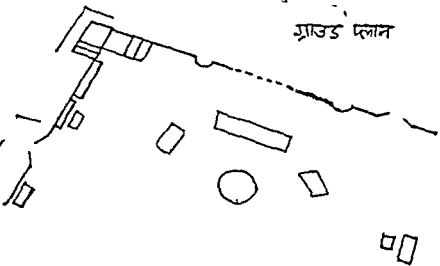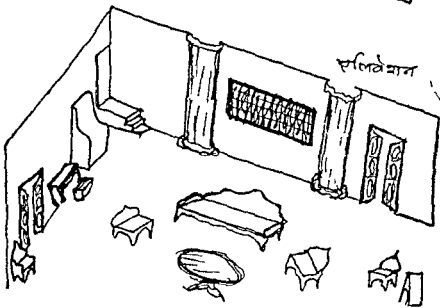
दूसरा अंक
तीसरा अंक
ग्राउंड प्लान
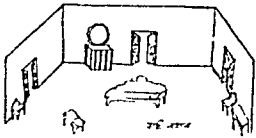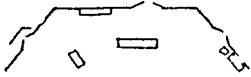
इसी प्रकार मच के क्रिया क्लाप हैं। बहुत ही चटकीने और भरे हुए सेट पर इनका प्रभाव न सिफ गौण हो जायेगा बल्कि नाटक की आत्मा को ठेस पहुचाएगा। यथायवादी प्रदशन के सभी तत्व 'आम का बगीचा' म ह लेकिन नाटक की तकनीक उन पर बहुत बडा नियत्रण रखने का मजबूर करती है।

बहुत सभव है कि कोई निर्देशक इसका अयथायवादी प्रदशन करना चाहे। लेकिन उस सबध म सिफ एक शब्द कहना चाहूगा। प्रदर्शन की शैली चुनते समय पूरे प्रदर्शन के व्यक्तित्व को ध्यान म रखना चाहिए। सिफ सुविधा के लिए ऐसा करना उचित नही होगा। यदि प्रदशन का ऐसा रूप अभीष्ट हो तो अयथायवादी शैली भी उत्तेजक हो सकती है।

मैंने प्रदर्शन के लिए यथार्थवादी शैली ही काम म ली।

सेट का जो खाका मैंने तैयार किया वह सलग्न रेखाचित्र के अनुसार था।

जब नाटक शुरू होता है तो मच पर अधेरा है। सोनिया हाथ म लालटेन या लम्प लेकर आती है तो प्रकाश उसके साथ ही प्रारभ होता है। वह लालटेन मच की दाहिनी ओर की टेबुल पर रख देती है। फिर जब खिडकी खोलती है तो प्रकाश धीरे धीरे सारे कमरे म छा जाता है।

सोनिया बहुत उत्तेजित है। हर आवाज पर उसे लगता है कि मालकिन आ गई। लालटेन रखकर पास की कुर्सी पर बैठ जाती है। फिर दौडकर खिडकी तक जाती है। जगन्नाथ नींद से जगा है। वह भी सुजाता से मिलने के लिए उत्सुक है। अपना पहला लम्बा सभाषण वह कमरे का मुआयना करता हुआ कहता है। जसे उसका सारा बचपन उसकी आखो के सामने नाच उठा है। लेकिन इसम करुणा या व्यथा नही है।

गदाधर के आते ही सोनिया और जगन्नाथ दोनो उसकी ओर मुखातिब होते हैं। लेकिन जगन्नाथ कुछ ही क्षणो के बाद अपनी दुनिया मे खो जाता है। सोनिया और गदाधर का आकषण सामने आता है फिर

भी जगन्नाथ दिलचस्पी नही लेता।

सुजाता के आते ही सारा वातावरण बदल जाता है। क्रिया-कलाप और सभाषण की गति बढ जाती है। घर लौटने की उत्तेजना मे सभी का स्वर जरा ऊचा है। जब काति और सोनिया मच पर अकेली रह जाती हैं तो सोनिया का कथन—गदाधर मुझसे शादी करना चाहता है, काति को अटपटा लगता है लेकिन सोनिया के जीवन की उत्तेजना उसकी उक्ति उसके लिए सहज बना देती है।

काति और उत्पला की बातचीत का पहला अश श्लथ और अवसाद भरा होता है। लेकिन जगन्नाथ की चर्चा आते ही वातावरण फिर हल्का हो जाता है। सोनिया और तिनकौडी का अश स्वत स्पष्ट है। गाव के वातावरण मे सोनिया गदाधर राम से ही प्रभावित है लेकिन तिनकौडी का बम्बइया अन्दाज देख कर वह चमत्कृत हो जाती है।

काफी पीने वाला क्रम सभी चरित्रो को उनकी पृष्ठभूमि के साथ अच्छी तरह जमाने का काम करता है। *कौन क्या है, उसकी पृठभूमि क्या है आदि* बाते स्पष्ट होती हैं। इस अश मे सभी पात्रो की विशिष्टताओ को अच्छी तरह उभारना चाहिए।

सुजाता देवी की आदत है कि सोफे पर बैठें तो नौकर गद्दिया ठीक कर दे पैर रखने के लिए पायदान जमा दे। रणवीर को जगन्नाथ के सस्ते सेंट, तिनकौडी की लहसन की गन्ध अखरती है। गोवधन ऊघता रहता है। बीच बीच मे कोई बात याद आती है तो पूछ लेता है। इन सबके बीच सूद की रकम चुकाने के लिए कर्ज मागना भी नही भूलता। जगन्नाथ के मन मे आम के बगीचे के लिए एक योजना है जो अपनी तरह से समझा कर कहता है।

इस पूरे अश मे रोजमर्रा की जिन्दगी की एकरसता के बीच-बीच पात्रो की विशिष्टता का रग उभरना चाहिए। हर पात्र अपनी पृष्ठभूमि के साथ धीरे धीरे विकसित होता है। उसे सहज ही होने देना चाहिए। दर्शको की हसी के लिए कही भी सस्ते क्रिया-कलाप या विद्रूप की सहायता नही लेनी चाहिए।

अनिल के आगमन के साथ गभीर प्रेम व्यापार का सकेत मिलता है। सुजाता का रुदन उसकी पृष्ठभूमि तयार करता है। घर की व्यवस्था म उत्पला व्यस्त है। लेकिन वही काति को प्रेमपाश म अनिल न फसा ले इसके लिए चौकस भी।

अत मे काति और उत्पला दो सहेलिया सी बातें करती है। रणवीर के आश्वासन पर काति आश्वस्त हो गयी है और बैठी बैठी ही सो जाती है। कानि को भीतर ले जाती हुई उत्पला अनिल को काट जाती है। अनिल का प्रथम अक का अतिम वाक्य काति के प्रति उसकी भावनाओ को स्पष्ट करता है।

नाटक पढते समय पहला अक उलझन म डाल दता है। इतने सारे सूत्र एक साथ सामन आते है। कौन सा सूत्र कथानक का मुख्याश बनगा स्पष्ट नही होता। नाटक का नाम एक ओर सकेत करता है। सोनिया की उत्सुकता दूसरी ओर सकेत करती है। जगन्नाथ चौधरी और उत्पला का परस्पर आकर्षण तीसरी ओर सकेत करता है। और अक के अत म अनिल और काति का प्रेम !

अभिनय म भी इस उलझन को ज्यो का त्यो निभाना चाहिए। किसी एक सूत्र पर बल डालना अनुचित होगा। एक फुलवारी म बहुत सारी कलिया एक साथ खिल रही है। किसी एक के साथ पक्षपात फुलवारी की शोभा के प्रति न्याय नही होगा। अभिनेताओ को चाहिए कि अपने को इस धारा मे छोड दे बहने दे। उनके साथ ही दर्शक भी बह चलेंग। दर्शको म से कोई किसी पात्र के साथ सहानुभूति बना लेगा तो कोई किसी पात्र के साथ। लेखक की ओर से किसी भी पात्र विशेष की ओर खास अलग सकेत नहीं है। लेखक के इस कौशल को उभारना ही मच पर अभीष्ट है। इसका कैसा स्वाद हो जाता है यह नाटक के अत म ही स्पष्ट होगा।

दूसरा अक बडा ही घटनाहीन और अनाटकीय है। दरअसल यही इसकी नाटकीयता है। पहले अक मे आम के बगीचे को लेकर जगन्नाथ चौधरी ने जो प्रस्ताव रखा था वह बिल्कुल दब सा गया है। सुजाता, रण-

वीर आदि अपनी सामान्य स्थिति म आ गय है हालाकि जगन्नाथ उन्ह याद भी दिलाता है और गुस्से म रणवीर को बुढिया तक कह डालता है ।

दूसरा अक शुरू होता है तो बीच वाले बेंच पर तिनकौडी और सोनिया है । तिनकौडी सोनिया को तोल रहा है । बम्बई के हिसाब से यह लडकी किस जगह फिट बठती है । गदाधर राम दूर से ही दोनो को देखता है और एकतारा बजा कर प्रेम का गीत गाता है । सोनिया जब उसे टोकती है तो बहुत ही सहज रूप म वह कहता है—प्रेम करन वाला के लिए यह (एक-तारा) तानपूरा है । जब बहाना बनाकर सोनिया उस भज देती है ता इसे भी प्रतिदिन की एक अप्रिय घटना मानकर वह चल देना है ।

जब सोनिया तिनकौडी के पास जा जाती है और समपण क लिए तयार हा जाती है ता तिनकौडी को झटका लगता है । वह एक सीख दकर उसम किनाराकशी कर लेता है ।

सुजाता रणवीर आदि बडे ही हल्क फुल्के मूड से आत ह । हल्की बातें करते हैं । सूद की रकम जायदाद के नीलाम आदि की बाते दब सी गई हैं ।

अनिल कांति और उत्पला के आगमन से एक नया स्वर उभरता है । अधेडा के विपरीत यौवन का स्वर जिसम आशा, साहस और आस्था छलकती है । अनिल जब भविष्य की बात करता है तो पूरे विश्वास के साथ । यह और बात है कि जब वह कांति का उन्मुक्त पवन की तरह बन्धनहीन हो जान के लिए ललकारता है तो दरअसल वह कांति का अपन प्रेमपाश म बाध रहा होता है । कौन जानता है कि नदी किनारे क्या हुआ !

ऐसा लगता है कि इस पूरे अक का नायक है अनिल जो बडी-बडी बातें करता है बहुत अच्छी तरह करता है । लेकिन अनिल भी सिफ बाते ही करता है । रणवीर एक तरह की बात करता है, अनिल दूसरी तरह की । दोना मे स कोई कुछ कर नही सकते । अनिल किसी मसीहा की तरह सामने नही आता । रणवीर अधेड है बीत जान वाले कल का स्वर है जिसम आल करण है सफाई है लेकिन जो समाप्त होन वाला है । इसके विपरीत अनिल यौवन का स्वर है । लेकिन इसम आदश व्यक्ति जसा कुछ नही है । जवानी

का सहज विश्वास है, जवानी की कमजोरियां भी हैं। यदि अनिल को सम्हाला नही गया तो वह सहज ही एक त्राता के रूप मे सामने आएगा और तीसरे अंक मे बड़ी उलझन होगी। अनिल को एक युवक की ही तरह प्रस्तुत करना चाहिए जिसकी जवान आशा मे यथार्थ की क्रूरता अभी नही समाई है और जो साहस के साथ भविष्य की ओर देख सकता है अपनी अवस्था के अनुकूल प्रेम कर सकता है और भावुक आदर्शवादिता मे अपने को प्रेम जैसे तुच्छ व्यापार से ऊपर समझता है।

अंक जब समाप्त हो रहा होता है तो अंधेरा बढ़ता जाता है कांति और अनिल के आशावादी स्वर गूंजते हैं और उनको दबोचती हुई उत्पला की आवाज आती है कांति, कांति।

दूसरे अंक मे भी स्पष्ट नही होता कि कौन सा सूत्र नाटक मे प्रमुख बनेगा। सोनिया कहती है—मुझे तो डर लगता है कि कही कुछ कर न बैठे। क्या गदाधर राम आत्महत्या कर लेगा? क्या रामटहल चौधरी जायदाद खरीद लेगा? क्या जगन्नाथ और उत्पला का प्रेम इस हद तक बढ़ जाएगा कि परिवार को जगन्नाथ ५० ६० हजार कर्ज दे देगा? क्या अनिल और कांति का प्रेम कोई रंग लाएगा?

तीसरे अंक का समय है रात्रि। बगल के कमरे मे गाना-बजाना हो रहा है। लेकिन इस रागरंग के वातावरण मे भी जायदाद नीलाम होने की विभीषिका सर पर सवार है। इस रागरंग के वातावरण मे ही अपने भीतरी वीरानपन की ओर सुजाता संकेत करती है और वह भी अनिल से। वह अपने कमरे मे जाने से डरती है। वह तनाव सह नही पा रही है।

अनिल अपनी दुनिया मे मस्त है। भविष्य की बात, सुनहरे सपने। सुजाता अपनी सारी स्थिति बता जाती है। जानते हुए भी अपने प्रेमी से अलग नही हो पाती। वर्तमान की विभीषिका मे प्रेमी की बाहों मे ही सहारा ढूंढती है, सुनहरे भविष्य की ओर देखने का साहस नही बटोर पाती क्योंकि जीवन के कटु अनुभवों ने उसकी दृष्टि धूमिल कर दी है।

सदा की ही तरह उत्पला गृहस्थी की उलझनों मे डूबी हुई है। गानेवाले

आ गये, बेमौके। उन्हें रुपया कहा से दिया जाय ? सुजाता का स्वभाव मालूम है। वह ना नहीं कह सकती। कहीं जगन्नाथ चौधरी की बात भी मन म होगी। लेकिन उसकी बात जबान पर नहीं आती।

गदाधर राम से तानपूरा टूट जाता है। जगन्नाथ चौधरी और रणवीर नीलाम स वापस लौटते हैं। जायदाद नीलाम हो गई। सुजाता फूट पड़ती है। *जगन्नाथ चौधरी गाव का अपढ़ जगना अपने को सम्भालने की कोशिश* करता है लेकिन अपने इस सौभाग्य पर इतराने से अपने को रोक नहीं सकता। अक की समाप्ति होती है कांति के आशावादी स्वर के साथ।

नाटक के अत म कई स्वर जो असगत स लगत ह एक साथ गूजन लगते है। गव से चूर जगन्नाथ चौधरी का स्वर है – हा कलाकारो, कुछ हो। गान का स्वर उभरकर दब जाता है लेकिन विलीन नहीं होता। इधर सुजाता रगमच पर रो रही ह। और फिर कांति का स्वर--अम्मा, अम्मा, तुम रोती हो। आओ मेरे साथ आओ

तीसरे अक तक पता चलता है कि आम के बगीचे की नीलामी ही प्रमुख बात थी। लेकिन अब तो वह भी हो गई। उसका रहस्य भी अब नहीं रहा। नाटक एक तरह से समाप्त हो गया। इसके बाद ?

चौथा अक पहले अक वाले कमरे यानी नसरी मे शुरू होता है। पर्दा उठने पर कमरा तो वही है लेकिन एक ओर बक्स आदि रखे हैं। दीवारो से तस्वीरें उतार दी गई है। घर को छोडकर जाने की तयारी है।

जगन्नाथ चौधरी मिठाई लिए खडा है। उसके लिए तो खुशी की ही बात है। सुजाता और रणवीर गाव के किसानो से विदा लेकर आते हैं। जाने की तयारिया हो गई हैं। बूढा रामनाथ अस्वस्थ है। उसे अस्पताल भेजने का फैसला किया गया है। सोनिया तिनकौडी से विदा ले रही है। सुजाता के लिए एक ही चिंता है। उत्पला का कुछ फैसला हो जाता।

वह जगन्नाथ चौधरी से साफ-साफ पूछती है। उत्पला को बुला भी देती है। बड़ी तेजी से चलते क्रिया कलाप म जैसे ब्रेक लग जाता है। उत्पला और जगन्नाथ चौधरी आमने सामने हैं। लेकिन सीधी बात नहीं कर सकते।

और बात फिर अनकही रह जाती है। कमरे के दरवाजे बन्द कर जगन्नाथ चौधरी सभी को ले जाता है। लगता है कि नाटक समाप्त हो गया। उसी समय रामनाथ आता है। दरवाजे बन्द हैं। लोग भूल गये। रामनाथ हाय तौबा नही मचाता। अपनी थकान की चर्चा करता हुआ लेट जाता है और उधर बगीचे में आम के पेड़ कटने शुरू हो जाते हैं। अभी अनिल और कांति के स्वर काना में गूज ही रहे हैं—नई जिन्दगी का स्वागत और पेड़ा के अररा कर गिरने का स्वर भी सामने आ जाता है।

सरसरी तौर पर देखें तो इस पूरे नाटक में तथाकथित नाटकीय उतार-चढ़ाव का बिल्कुल अभाव है। सुजाता का रोना भी ऐसा है जिस पर दूसरे ही क्षण वह स्वयं काबू पा लेती है। दर्शकों पर किसी करुण रस का प्रभाव कैसे टिक सकता है।

पात्र भी अनूठे या विशिष्ट नही हैं। बहुत ही सामान्य लोग हैं। उनकी समस्याएं भी कुछ ऐसी जटिल या असामान्य नही हैं और न ही किसी महान घटना, समस्या या पात्र की ओर कोई संकेत है।

यही इस नाटक की विशेषता है। सामान्य लोगों की रोजमर्रा की घटनाओं को सामने रखा गया है। ऐसी ही जिन्दगी हम जी रहे हैं। इसको बना संवार कर रखने की कोशिश नही की है। फिर भी यह कोरी फोटोग्राफी नहीं है। यह है चित्रकला।

क्योंकि लेखक ने उन्हें ऐसे कौशल से सजाया है कि एकरस का अच्छी तरह परिपाक भी नही हो पाता कि दूसरा रस छलकने लगता है। मिठाई, नमकीन अचार आदि-आदि विभिन्न रसों के अलग अलग प्लेट नहीं हैं। स्वीट और सावर प्रान में जिस तरह दो रस मिलते हैं, इसमें हर स्थल पर एक साथ कई रसों का बोध होता है। यह कौशल लेखक की अपनी उपलब्धि है।

इसका एक विलक्षण परिणाम होता है। यह नाटक दुखांत है या सुखांत कहना कठिन है। प्रकाशित प्रतियों में छपा है 'चार अंकों की कामदी'। लेकिन किसी दिन आपको यही नाटक कामदी मालूम होगा और

किसी दिन त्रासदी। यह दशकों की सामूहिक मनोदशा पर निर्भर करता है।

दशकों का ऐसा प्रयोग, जहा तक मुझे ज्ञात है, किसी नाटककार ने नही किया। अभिनेताओं से उम्मीद की जाती है कि दशकों पर अभिनय के समय वे जरा भी ध्यान नही दें। और यह भी तथ्य है कि पात्रों का अलग अलग स्तर पर जीवन उनके असगत वार्तालाप आदि दशकों तक पहुच कर ही सज पाते हैं एक अर्थ सगति प्राप्त करते हैं। यह तो ठीक है कि हर नाटक का स्वाद दशकों के साथ वह नही रहता जो अभ्यास के समय रहता है। लेकिन चेखव के साथ तो उस स्वाद में मौलिक परिवर्तन होते हैं। अन्य नाटककारों के साथ एक दृश्य अभ्यास के समय यदि करुण नही बन पाता तो दशकों की उपस्थिति में उसकी कारुणिकता उभर जाती है। कोई अश हास्य के लिए है। अभ्यास में पता नही चलता। दशकों के सामने उसका हास्य निखर उठता है।

लेकिन चेखव के साथ ऐसा नही होता। एक वाक्य निरर्थक लगता है। पता नही चलता कि इससे करुण रस का उद्रेक होगा या हास्य रस का। अथवा किसी वाक्य से स्पष्ट छलकता है एक प्रकार का रस। और दशकों के सामने उसी अश को देखिए। उसका सारा रग ही बदल जाता है। लगता है कि दशक ही सबसे बड़े अभिनेता हैं जो निश्चयात्मक रूप से रग भरते हैं।

नाटक का जितना भी विश्लेषण किया जाय उससे सकेत तो मिल सकता है पर लेखक की कला की जादूगरी को पकड़ा नही जा सकता। जागरूक दल इन सकेतो को ध्यान में रखकर नाटक का प्रदर्शन आयोजित करें तो उपलब्धियो के नये क्षितिज उनके सामने आयेंगे।

स्तानिस्लाव्स्की के ही शब्दो से अत करना चाहूगा —

'हमारी कला में शेक्सपिअर मोलिए पुश्किन गोगोल और तुर्गनेव आदि के बनाये रास्ते पर चेखव मील का पत्थर है। चेखव के अध्ययन और उसकी कला पर अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद एक नये पथ प्रदर्शक की प्रतीक्षा करनी चाहिए जो हमारी इस शाश्वत कला का एक

नया अध्याय लिखेगा, हम नयी चाटिया तक पहुचायेगा। जहा स नय क्षितिज खुल जाएगे भविष्य के विकास के लिए।

चेखव की कृतिया की तरह जो कृतिया मील का पत्थर बनती है वे समय के साथ पीछे नही जाती, उनके चरण भविष्य का मापते है। जिस जीवन को वे चित्रित करते हैं। वह काल के गभ मे समा सकता है उसकी यथातथ्यता समाप्त हा सकती है, जो दूरदश नही है उनके लिए उनका आकपण खतम हा सकता है। लेकिन सच्ची कलाकृतिया इन कारणा से नही मरती। उनकी काव्यात्मकता कभी समाप्त नही होती। हो सकता है कि चेखव का क्या क्राति के बाद पुराना पड गया है अब मान्य नही। लेकिन उसका 'क्से ता अभी भी हमारे रगमच पर उस तरह जी नही सका जो उसका प्राप्य है

इसलिए चेखव वाला अध्याय यहा समाप्त नही हाता। उमे अब तक ठीक तरह से पढा ही नही गया, अच्छी तरह समझा ही नही गया। बहुत जल्दबाजी म किताब ब द कर दी गई।

इस किताब को फिर से खोलना चाहिए, फिर से पढना चाहिए और विधिवत सागोपाग अध्ययन करना चाहिए।

—वीरेन्द्र नारायण

आम का बगीचा

प्रथम अभिनय—श्रीराम सेंटर, नई दिल्ली
२९ ३० नवम्बर, १ दिसम्बर, १९७७

पात्र-परिचय
(प्रवेशानुसार)

जगन्नाथ—सतीश वर्मा
सोनिया—प्रशिला वर्टन
गदाधर राम—कृष्णदत्त काबरा
शांति—मीना खान
सुजाता—निमला अग्निहोत्री
उत्पला—मोहिनी द्रानी
रणवीर—लेखराज
कल्याणी—कृष्णा दुग्गल
तिनकौडी—हंसराज भाटिया
रामनाथ—चन्द्रशेखर कपिल
गोवर्धन—धीरेन्द्र सिंह
अनिल—सुरेन्द्र कुमार ठिस्सु
भिखारी—सैयद कासिम

श्रेय

मंच—बलवन्त सिंह, सतीश कुमार,
सतीश कपूर, पृथ्वीपाल, नत्थू
प्रकाश—नंदकिशोर चौरसिया,
मकसूद अहमद
रूपान्तर, निर्देशन
और प्रस्तुतीकरण—वीरेन्द्र नारायण

पहला अक

[श्रीमती सिंह के घर का एक कमरा जिस म पहले बच्चे सोया करत थे और आज भी इसे नमरी ही कहा जाता है। कमरे मे कई दरवाजे है। एक दरवाजा काति के कमरे मे खुलता है। सुबह का समय है और सूय निकलने ही वाला है। कमरे की खिडकिया बन्द हैं लेकिन उनके खुलते ही आम का बगीचा दिखाई पडता है। अप्रल माच का मौसम है।

सोनिया हाथ मे लालटेन लिए प्रवेश करती है। उसके पीछे-पीछे जगन्नाथ चौधरी हाथ म किताब लिए आता है।]

जगन्नाथ खर ! गाडी आ गई होगी। क्या वजा है ?

सानिया पाच वजने वाले है। रोशनी निकल आई। (लालटेन बुझा देती है।)

जगन्नाथ ता गाडी कितनी लेट थी ? कम स कम दो घट ता जरूर रही हागी। (जम्हाई लेता हुआ अगडाई लेता है।) मैं भी कैसा गदहा हू ! कसा उल्लू बना ! यहा आया कि स्टेशन जाकर उन लागा से मिलूगा और बस साता ही रह गया। कुर्सी पर ही झपकी आ गई। अख तुमने जगाया क्या नही ?

सोनिया मैंने तो समझा कि आप चले गए। (सुनती हुई।) ऐमा लगता है कि वे लोग आ गए।

जगन्नाथ (सुनकर) नही — आएगे तो सामान उतारा जाएगा, शोर गुल होगा। सुजाता देवी पाच वप तक बाहर थी, पता नही अब कसी दीखती हागी। बडी ही भली, सीधी-सादी,

आराम पसन्द। मुझे याद है, जब मैं चौदह-पन्द्रह वष का था—मेरे बाप की छोटी सी दुकान गाव मे थी। उसने ऐसा तमाचा मारा कि नाक से खून बहने लगा हम लोग इसी डेवढी म कुछ काम के लिए आए थे। वह तो ताडी पीकर चूर था। मुझे सब कुछ याद है जसे कल की ही बात हो। सुजाता देवी—उस समय उनकी उम्र भी कम थी और बडी सुदर दीखती थी—मुझे इसी कमरे म लाकर उन्होंने मेरा मुह धो दिया और हसकर कहने लगी—रोओ मत साहुजी, गद्दी पर बैठने से पहले ही यह सब ठीक हो जाएगा। रोते क्या हो। (कुछ रुककर) साहुजी वह ठीक ही कहती थीं। मेरा बाप भी साहु था। मुझे देखो भले आदमियो सा कपडा पहने हू, लेकिन (कधे मटकाता है।) मेरे पास पसा है, मैं धनियो म गिना जाता हू लेकिन मेरा मन साहुजी है। चमडी उधड कर देखो खाटी साहुजी। (किताब के पन्ने उलटता है।) मैं यह किताब पढ रहा था, एक अक्षर समझ मे नहीं आया। पढते पढते सो गया।

सोनिया कुत्ते सब सारी रात नहीं सोये हैं। उन्ह मालूम हो गया है कि मालकिन आ रही है।

जगन्नाथ क्या बात है सोनिया ?

सोनिया भगवान जाने, मेरे हाथ काप रहे है ऐसा लगता है कि मैं बेहोश हो जाऊगी।

जगन्नाथ देख सोनिया तू बहुत बनती जा रही है। बडे आदमियो की बीवी की तरह कपडे पहनती है उनकी तरह बाल बनाती है। इससे काम नहीं चलेगा समझी। अपनी जगह देख।

[गदाधर राम प्रवेश करता है। उसके कपडे लत्ते साधारण है और एक नया जूता पहने है जिसने काट लिया है और

वह लगडा कर चलता है। उसके हाथ मे फूलो का एक गुलदस्ता है। प्रवेश करते ही उसके हाथो से गुलदस्ता गिर पडता है।]

गदाधर (गुलदस्ता उठाते हुए) माली ने य फूल दिये है, खाने के कमरे मे रखने के लिए ? (सोनिया को गुलदस्ता देता है)

जगनाथ मेरे लिए एक ग्लास पानी लेती आना।

सोनिया बहुत अच्छा (प्रस्थान)।

गदाधर बाहर धूप निकल आयी है, अभी ही गर्मी मालूम होती है। आम के पेड मजर से लद गए हैं। यह मौसम वडा खराब है। (लम्बी सास लेता हुआ) वडा ही खराव। यानी इससे कुछ बनता नही। और तुम्ह बताऊ, कल मैंन एक जोडा जूता खरीदा, साले ने इस तरह काट लिया है कि क्या बताऊ। मेरे कहने का मतलव है कि यानी परेशान हो गया हू। क्या करू, वताओ तो।

जगन्नाथ ओह चुप भी रहो। तुम तो परेशान कर देते हो।

गदाधर हर रोज मेरे साथ कोई न कोई अप्रिय घटना घटती ही रहती है। मैं उसकी शिकायत नही करता, मैं तो आदी हो गया हू। कभी-कभी मुझे भी अपन ऊपर हसी आती है।

[सोनिया पानी का ग्लास लेकर आती है और जगनाथ चौधरी को देती ह।]

गदाधर खर, मैं चला। (कुर्सी से टकरा जाता है और कुर्सी उलट जाती है।) देखा, देखा कि नही ? मेरे कहने का मतलब है कि यानी अजब तमाशा है। (प्रस्थान)

सोनिया (एक गाल हस कर) एक बात कहू साहुजी। गदाधर मुझसे शादी करना चाहता ह।

जगनाथ (पानी खतम करते हुए) हू।

सोनिया मेरी समझ म कुछ नही आता वस वडा ही शात आदमी है लेकिन कभी-कभी जब वात करन लगता है, तो कुछ समम म नही आता कि क्या कह रहा है। सुनन म अच्छा लगता है, लेकिन कुछ समझ म नही आता। वस आदमी बुरा नही लगता और वह मुझस शादी भी करना चाहता है। बडी ही अजीब किस्मत है बेचारे की। रोज कुछ न कुछ उल्टी-सीधी वात उसके साथ हो जाती है। इसीलिए लोग उस चिढात हैं और

जगन्नाथ (सुनता हुआ) हा व लोग आ गये।

सोनिया आ गय। अरे वाप। पता नही क्या वात है मुझे तो कपकपी छूट रही है।

जगन्नाथ हा व लोग आ गए। चलो पता नही वह मुझे पहचानेंगी भी ? पाच वर्षो स नही देखा है। (प्रस्थान।)

सोनिया हाय हाय। मेरा तो बुरा हाल है। मैं तो बेहोश हो जाऊगी। (*भागती हुई जाती है।*)

[दो घोडेगाडियो के आकर रुकने की आवाज सुनाई पडती है। मच खाली है बगल के कमरे म लोगो के आने की आवाज वढती जाती है। रामनाथ जल्दी जल्दी मच पर से चला जाता है। वह भी मालकिन की अगवानी के लिए स्टेशन गया था। कुरता, वेस्टकोट और टोपी पहने है बुदबुदाना उसका स्वभाव हो गया है पर किसी की समय म नही आता कि वह क्या वकता है। नेपथ्य म शोरगुल बढता जाता है। एक नारी कठ सुनाई पडता है—इधर स चलो। सुजाता

देवी, काति, उत्पला, गोवधन और श्री
रणवीर सिंह प्रवेश करते हैं। सभी के
कपडे सफर के है। कल्याणी के हाथ म कुत्ते
की जजीर है और नौकर चाकरो के हाथ में
सामान है। जगन्नाथ चौधरी भी साथ-साथ
हैं। सोनिया के हाथा मे एक गठरी है।]

कांति (प्रवेश करते हुए) इधर से अम्मा। अच्छा, बताओ तो कि यह कौन सा कमरा है?

सुजाता (हर्ष से पुलकित होकर) नसरी।

उत्पला ओह। कैसा मौसम हो गया है। देखो अम्मा, तुम्हारे दोना कमरे ठीक उसी तरह हैं, है कि नही?

सुजाता नसरी, मेरा सुदर सलोना कमरा जब मैं छोटी थी तो इसी म सोती थी और आज लगता है कि मैं फिर नन्ही सी हो गयी हू। (आखें पोछती है।) और उत्पला ठीक वसी है, वैष्णव की वैष्णव। मैंने सोनिया को भी पहचान लिया।

रणवीर गाडी दो घटे लेट थी। जरा सोचो तो। क्या तमाशा है।

[सुजाता और रणवीर जाते हैं]

कल्याणी (गोवधन से) जानते हैं, यह कुत्ता पान खाता है। (दोनो का प्रस्थान।)

[एक एक कर सभी चले जाते हैं। सिफ
सोनिया और कांति रह जाती हैं।]

सोनिया ओह, आपकी प्रतीक्षा करते करते (कांति जूडे से फूल की माला निकालना चाहती है। सोनिया उसकी मदद कर देती है।)

कांति मैं चार रात से साई नही हू। (आईने के पास जाकर जूडा खोलने लगती है।)

सोनिया आप ता माघ म गयी। उस समय जाडा था। अब तो गर्मी

आ पहुची। मुनम ता रहा ही नहीं जाता था। मरी रानी आह लेकिन एक बात तो आपको तुरन्त कहनी होगी। मैं एक मिनट भी नही रह सकती

कांति (बिना किसी उत्साह के) क्या बात है ?

सोनिया (शर्मा कर) गदाधर मुझसे शादी करना चाहता है।

कांति तुम और कुछ नही सोच सकती ? (बाल ठीक करती हुई) मेरे सारे पिन खो गये। (वह बहुत थकी है, मुश्किल से खड़ी रह पा रही है।)

सोनिया मैं क्या जानू मुझे क्या करना चाहिए। वह मुझे प्यार करता है इतना प्यार करता है।

कांति (अपने कमरे के दरवाजे के पास जाकर देखती हुई) मेरा कमरा, ये खिड़कियां जैसे मैं इनसे अलग ही नहीं हुई। मैं फिर अपने घर में हू। कल सुबह उठकर मैं सीधी फुलवारी में दौड़ जाऊंगी। काश की इस समय सो पाती। मैं इतनी परेशान थी कि रात में जरा भी नहीं सो सकी।

सोनिया श्री अनिल कुमार अनल जी आये हैं, परसों।

कांति (हर्ष से) अनिल।

सोनिया वह नीचे के कमरे में सो रहे हैं। (घड़ी देखती हुई) कहिए तो उन्हें जगा दू। लेकिन उत्पला देवी ने कहा अनिल जी को अभी मत जगाना।

[आंचल के कोने से चाभियों का गुच्छा लटकाए उत्पला आती है।]

उत्पला सोनिया,जल्दी से काफी बना ला अम्मा काफी माग रही थी।

सोनिया एक मिनट में। (जल्दी से प्रस्थान।)

उत्पला अरे मेरी रानी। (आलिंगन करती हुई) मेरी प्यारी। वापस घर आ गयी।

कांति ओह तुम्हें क्या पता है कि मुझ पर क्या बीती।

उत्पला मैं अन्दाज लगा सकती हू ।

कांति जनवरी म मैं गयी । काफी सर्दी थी । रास्ते भर कल्याणी बकबक करती रही । और अपना खेल-तमाशा दिखाती रही । म तो ऊब गई । तुमने उसको क्या साथ लगा दिया ।

उत्पला तो तुम सत्रह वर्ष की उम्र म अकेली कसे जाती ?

कांति जब बम्बई पहुची तो वहा का मौसम अजब । लोगो की भाषा अजीब । अम्मा पाचवी मजिल पर रहती थी । जब मैं पहुची तो कई लोग बैठे थे । कुछ पारसी औरतें थी, एक के हाथ म छोटी सी किताब थी । सारा कमरा सिगरेट के धुए स भरा, इतना गदा । ओह ! हठात, मुझे अम्मा पर बडी तरस आ गयी । मैंने उनका सर जा हथेलिया मे लिया तो छोडन का जी नही करता था । पीछे अम्मा भी खूब रोई और मुझे बहुत लाड प्यार किया ।

उत्पला (आंखें पोछती हुई) मुझस तो सुना नही जाता ।

कांति पूना के पास वाला मकान बिक चुका था और अम्मा के पास कुछ नही था, एकदम कुछ नही । मेरे पास भी कुछ नहीं । किसी तरह मैं बम्बई पहुच गयी थी । और अम्मा की समझ मे बात आती नही थी । रेस्तरा म हर वेटर को एक रुपया टिप देती । कल्याणी का वही हाल । और तिनकौडी को भी होटल का पूरा भोजन चाहिए। तिनकौडी अम्मा का बावर्ची है । साथ आया है ।

उत्पला हा अभागे को देखा है ।

कांति अच्छा यह बताओ कि यहा का क्या हाल है ? सूद दे दिया गया ।

उत्पला उहूं ।

कांति हे भगवान ।

उत्पला अगले महीने सभी कुछ नीलाम पर चढ जाएगा ।

कांति हा भगवान।

जगन्नाथ (दरवाजे के पास सर निकाल कर) अच्छ ख खे। (प्रस्थान)

उत्पला मन तो करता है कि (तमाचा दिखाती हुई।)

कांति कहा तक बात बढी सच बताओ। (गले मे हाथ डाल देती है।)

उत्पला कुछ नहीं। वह बहुत कामकाजी आदमी है। मेरे बारे म सोचने के लिए उसके पास समय नहीं। मेरी उस कुछ पर चाह भी नहीं। वह यहा न आये तो अच्छा। म तो मरी जाती हू। हर कोई समझता है कि हम लोगो की शादी होगी लोग दबी जबान स चर्चा भी करते हैं लेकिन इसम कुछ नहीं धरा है। सब कुछ एक सपना। (बात बदलती हुई।) यह नया हार खरीदा है? बम्बई म?

कांति (उदास स्वर मे) अम्मा न खरीद दिया है। (वह अपने कमरे मे जाती है और वहा से पुलकित स्वर मे।) जानती हो, बम्बई म म हवाई जहाज पर चढी थी।

उत्पला सच? अरे मेरी रानी। (दरवाजे के पास खडी होती है। सोनिया कॉफी का सामान लाकर काफी तैयार करने लगती है।) जानती हो, मैं घर का कामकाज करती हुई क्या सोचती हू? मैं खाली सपन देखा करती हू। यदि तुम्हारी शादी किसी धनी घर म करा सकी, तो मै निश्चित हो जाऊगी। मैं तो तीरथ करने चली जाऊगी काशी, पुरी, बद्रिकाश्रम। मैं खाली तीरथ करती फिरूगी।

कांति (कमरे से) फुलवारी म चिडिया चहचहान लगी। कितने बजा है?

उत्पला पाच बज गये। तुम एक नींद सो लती। (कांति के कमरे में जाती है।)

[तिनकौनी अपनी गठरी लिए हुए प्रवेश

करता है। सोनिया को देखकर कई बार खांसता है। फिर मंच पर से होता हुआ एक ओर जाता है।]

सोनिया अरे तिनकौड़ी। बम्बई जाकर तुम कितने बदल गये। पह-चाने ही नहीं जाते हो।

तिनकौड़ी और तुम कौन हो?

सोनिया मैं। दीनदयाल की बेटी सोनिया। जब तुम बम्बई गये तो मैं इत्ती-सी थी। (हाथ से बताती है।)भला तुम कैसे पह-चानोगे।

तिनकौड़ी एकदम गुलाबछड़ी। (सोनिया की ओर बढ़ता है सोनिया के मुंह से हल्की चीख निकल पड़ती है और उसके हाथ से तश्तरी गिर कर टूट जाती है। तिनकौड़ी जल्दी से निकल जाता है।)

उत्पला (दरवाजे पर से कड़े स्वर में) क्या हो रहा है?

सोनिया (रुआंसी आवाज में) मुझसे तश्तरी टूट गई।

उत्पला अच्छा शकुन है।

[कांति और उत्पला फिर नर्सरी में आ जाती हैं।]

कांति अम्मा को सम्हालना पड़ेगा। अनिलजी आये हैं।

उत्पला मैंने मना कर दिया है कि उन्हें कोई नहीं जगाये।

कांति (चिंतित) छः वर्ष हुए पिताजी का देहान्त हुआ। और एक ही महीने के बाद छोटा भाई रोहित नदी में डूब कर मर गया। सात वर्ष का था। कैसा प्यारा। अम्मा इस चोट को सह नहीं सकीं और चली गईं उन्होंने मुड़कर देखा भी नहीं। (कांपती हुई) ओह, मैं उनके दिल का हाल खूब समझती हूं। काश! वह जान पातीं मैं उनकी चोट को कितनी अच्छी तरह समझती हूं। (रुक कर) अनिल रोहित को पढ़ाते थे। अम्मा

को सारी बात याद हो आ सकती है।

[बूढा रामनाथ प्रवेश करता है। उसने कंधे पर एक झाड रख लिया है।]

रामनाथ (कॉफी के सामान के पास जाते हुए) मालकिन यहीं काफी पीयेंगी। (देखते हुए) काफी तैयार है? (सोनिया से कड़े स्वर मे) और क्रीम कहा है?

सोनिया ओह, अरे बाप। (भागती हुई जाती है।)

रामनाथ (काफी के बतनो को सहेजता हुआ) यह लडकी पगली है। (बुदबुदाता है।) बम्बई मालिक भी बम्बई जाते थे मोटर से (हसता है।)

उत्पला क्यो हस रहे हो रामनाथ?

रामनाथ हुकुम (खुशी से) मालकिन घर वापस आ गयी। अब मैं मर भी जाऊ तो मुझे परवाह नहीं। (हर्ष के आसू पोछता है। सुजाता रणवीर गोवधन और जगन्नाथ चौधरी आते हैं। सोनिया जल्दी से क्रीम का बतन रख जाती है।)

सुजाता (प्रवेश करते हुए) हा, तो यह घोडे की शह और मात।

रणवीर घाडे की शह मात। (सभी हसते हैं।) बर्षों पहले हम और तुम नन्हे भाई बहन इसी कमरे म सोते थे और कसा अच रज है कि अब मैं इक्यावन वष का हो गया।

जगन्नाथ हा, समय भागा जाता है।

रणवीर क्या?

जगन्नाथ मैंने कहा समय भागा जाता है।

रणवीर नीबू का सेंट महकता है (नाक सिकोडता है।)

कांति मैं सोने जाती हू।

सुजाता (गालों को हथेलियों के बीच लेकर ललाट चूमते हुए) मेरी प्यारी बेटी। घर आकर खुशी मे पागल हो गयी है। है न? मेरे होश भी ठिकाने नहीं।

कान्ति अच्छा मामा।

रणवीर सो जाओ। जाओ बेटा। मा से कितना मिलती है। इस उम्र मे तुम ठीक वसी ही लगती थी सुजाता।

[कान्ति का प्रस्थान]

सुजाता बहुत थक गयी।

गोवधन सफर भी कितना लम्बा है।

उत्पला (गोवधन और जगन्नाथ से) काफी समय हो गया। अब काम धधा देखना चाहिए।

सुजाता (हसकर) उत्पला जरा भी नही बदली है। (उत्पला का ललाट चमती है।) मुझे थोडी काफी पी लेने दो फिर हम सब काम धधे म लग जायेंगे। (रामनाथ सोफे की गद्दी ठीक कर देता है।) आह! बेचारा रामनाथ। मुझे काफी पीने की बहुत बुरी लत लग गयी है। रात दिन काफी पीती रहती हू। (रामनाथ गद्दी को ठीक कर पर के नीचे रखता है।) ओह! हम लोगो का प्यारा रामनाथ।

उत्पला मैं जाकर देखू कि सामान ठीक से सहेजे गए या नही। (प्रस्थान)

सुजाता क्या सचमुच मैं इस घर मे बठी हू। मुझे ऐसा लगता है कि पागल की तरह मैं नाचने लगू। (तिलहथियों मे मुह छिपा कर) या मैं सपना तो नही देख रही? ओह, मैं अपने इस प्रदेश को कितना प्यार करती हू। रास्ते मे गाडी के बाहर मुझे कुछ दिखायी नही पडता था। मेरी आखें आसू से गीली ही रहती थी। खैर, आह मेरे रामनाथ। लाओ काफी। तुमको देखकर मुझको कितनी खुशी होती है।

रामनाथ परसो।

रणवीर वह ठीक से सुनता नही, बहरा हो गया है।

जगन्नाथ मुझे आठ बजे की गाडी से कलकत्ता जाना है। क्या मुसीबत

है। मैं जरा एक नजर आपको देखना चाहता हू, दा बातें करना चाहता हू। बम्बई की साडी है ? बडी अच्छी है।

गोवधन अच्छी है ? पागल कर देन वाली है।

जगन्नाथ रणवीर बाबू कहते है कि मैं एक दहाती बनिया हू, मक्खी चूस। मैं उसकी परवाह नही करता। कह जो जी मे आव। मैं सिफ यही चाहता हू कि आप मुझ पर उसी तरह विश्वास रखें जिस तरह पहले रखती थी। मरा बाप आपके यहा नौकर था, आपके बाप-दादा का नौकर था। आपने मरे लिए इतना किया है कि मैं वह सब भूल जाता हू। आपकी अपनी बहन, अपनी बहन से भी ज्यादा समझता हू।

सुजाता मैं चुप बठ नही सकती। यह खुशी मुझे पागल बना रही है। (भावातिरेक मे उठकर कमरे मे घूमती है) आप हस सकते है पर मारे खुशी के मैं दीवानी हो गई हू। मेरा शेल्फ, मेरा प्यारा टबुल।

रणवीर तुम गई तो नानी का दहान्त हा गया।

सुजाता (बैठ कर काफी पीती हुई) हा, मुझे मालूम हुआ। भगवान उनकी आत्मा को शाति दें। मुझे चिट्ठी मिली थी।

रणवीर वह मनहरण सिह भी मर गए। अपन यहा जो पुनीतराम काम करता था वह आजकल पुलीस की नौकरी करता है। (जेब से पान का डब्बा निकाल कर पान और तम्बाकू खाता है।)

गोवधन मेरी लडकी न आपको प्रणाम कहा है।

जगन्नाथ मैं आपको एक खुशखबरी सुनाता हू (घडी देखते हुए) न एकदम समय नही है। फिर भी दो मिनट म कह दू। यह तो मालूम ही होगा कि आप का आम का बगीचा नीलाम होने जा रहा है। लेकिन उसके लिए चिंता करने की जरूरत नही। आप घोडे बेच कर सो सकती हैं मैंने रास्ता ढूढ निकाला है।

देखिए, यह है मेरी योजना। ध्यान देकर सुनिए। आपका बगीचा शहर से सिफ तीन मील दूर है। यदि आप अपना बगीचा छोटे-छोटे टुकडो मे बाटकर किराये पर लगा दीजिए तो कम से कम बीस हजार रुपया सालाना आमदनी हो जाएगी।

रणवीर क्या खब्ती की तरह बकते हो?

सुजाता मैं तुम्हारी बात समझी नही जगन्नाथ।

जगन्नाथ एक-एक टुकडे के लिए आप सालाना किराया लीजिए। और अभी स खबर कर दीजिए तो एक इच जमीन भी या नही छूटेगी। मैं शत बद सकता हू। पास नदी बहती है। शहर के लाग जमीन को लूट लेंगे। मैं तो आपका बधाई देना चाहता हू। बडा ही सुदर रास्ता निकल आया है। अलबत्ता जगह को साफ करना पडेगा। ये मकान तोडकर छोटे छोटे बगले बनवाने होंगे और यह बगीचा तो काटना ही पडेगा।

सुजाता काटना पडेगा? तुम पागल तो नही हो गए हो। इस सारे इलाके म यदि कोई अच्छी चीज, देखने लायक चीज है तो यही बगीचा।

जगनाथ इस बगीचे के बारे म देखने लायक सिफ यही बात है कि यह बहुत लबा चौडा है और इसम जो आम फलते हैं व अब किसी के काम के नही।

रणवीर इस बगीचे का नाम विश्वकोष मे भी है।

जगन्नाथ (घडी देखते हुए आजिजी से) यदि आप इस विषय म सोच नही सकते या फैसला नही कर सकते तो यह बगीचा ही नही, आपकी सारी जायदाद नीलाम हो जाएगी। आपको फसला करना ही पडेगा, मैं विश्वास दिलाता हू कि दूसरा चारा नही।

रामनाथ पुराने जमाने मे, चालीस-पचास बरस पहले इस बगीचे म

कैसे आम फलते थे, ठीकेदार आते थे, ठीका होता था, पहरा बठता था और

रणवीर चुप रहा रामनाथ।

रामनाथ *और बैलगाडियो पर लदकर आम भेजे जाते थ। कितना पसा* आता था। उस समय आम भी कसे मीठे, रसदार हान थे।

सुजाता और अब क्या हो गया ?

रामनाथ राम जाने।

गोवधन बम्बई का हाल बताइए। वहा अण्डा खाना पडता होगा।

सुजाता मैं मुर्गी खाती थी।

गोवधन मुर्गी। हरे कृष्ण ! हरे कृष्ण !!

जगन्नाथ अभी तक शहर के आस पास के इन गावा म रईस और साधारण आदमी रहते थे। पर अब शहरा के आसपास कोसा तक बगले भरे मिलेंगे। २५-३० वर्षों म तो इनकी सख्या और भी बढ जाएगी। अभी ता बरामदे पर बैठकर व चाय पीते है। पीछे चलकर व सब्जी उपजाना शुरू कर दे सकते हैं। खेती कर सकत हैं। तब आपका यह बगीचा जिन्दगी दौलत, चहल-पहल से भर जाएगा।

रणवीर क्या खन्ती जसी बात है।

[उत्पला और तिनकौडी का प्रवश। उत्पला आचल से चाभिया का गुच्छा खोलकर किताबो का सेल्फ खोलती है और दो तार निकालती है।]

उत्पला *आपके नाम स दा तार आया था। (तार देती है।)*

सुजाता (तार का लिफाफा देखकर) बम्बई के तार हैं। बम्बई से मरा काइ नाता नही रहा।

[तार पढकर वह फेंक देती है।]

रणवीर जानती हो सुजाता, किताबा का शेल्फ कितना पुराना है ?

करीब एक सप्ताह हुआ मैंने इसे खोला था। एक जगह तारीख लिखी है एक सौ वर्ष। माना कि यह बेजान चीज है पर इसको सौ वर्ष पहले तैयार किया गया था। भला बताओ तो। एक सौ वर्ष।

गोवर्धन एक सौ वर्ष। हरे कृष्ण। हरे कृष्ण!!

रणवीर हां यह बड़ा पुराना और कीमती है। (हाथ फेरता हुआ) ऐ मेरे दोस्त। मेरे परिवार के पुराने साथी। तुम्हारे सामने मेरा सर झुका है। एक सौ वर्ष तक तुमने अच्छाई और न्याय की सेवा की है। एक सौ वर्षों तक तुमने अच्छाई और कर्मठता का बीज बोया है। तुम्हारी मूक वाणी ने हमारे परिवार के कई पुश्तों में सुनहरे भविष्य के प्रति गहरी आस्था कायम रखी है, तुमने हमें साहस और बल दिया है। तुमने हम लोगों में सामाजिक उपकार और सामाजिक अनुभूति का संचार किया है। (रुकता है।)

जगन्नाथ हां

सुजाता (हंसकर) तुम जरा भी नहीं बदले भैया।

रणवीर (अप्रतिभ होकर) वह घोड़े का शह और मात।

जगन्नाथ (घड़ी देखकर) जाने का समय हो गया।

तिनकौड़ी (दवा की डिबिया लाकर सुजाता को देता हुआ) आप दवा खा लेती।

गोवर्धन इतनी दवाएं मत खाया कीजिए। इनसे न तो फायदा होता है और न नुकसान। मुझे दीजिए। (दवा लेकर सभी टिकिया तलहथी पर निकाल लेता है और एक साथ मुंह में डालकर पानी पी जाता है।) बस, हो गया।

सुजाता पागल हो गये हो क्या।

गोवर्धन मैं सब एक साथ निगल गया।

जगन्नाथ क्या पेट है। बाप रे।

[सभी एक साथ हसत हैं।]

रामनाथ राजा साहब एक बार आए थे ता आधी वाल्टी खीरा खा गए थ। (बुदबुदाता है।)

सुजाता क्या कहता है ?

उत्पला पिछले तीन वर्षों स वह इसी तरह बुदबुदाता रहता है। हम लोग आदी हो गए हैं।

तिनकौड़ी बुढापा है।

[कल्याणी आती है। दुबली-पतली। उसके कपडे-लत्ते जरा अस्त-व्यस्त हैं अभी लबी सफर स लौटी है।)

जगन्नाथ अहा-हा। यह कल्याणी आ गयी। कल्याणी जरा एक गाना सुना दो।

कल्याणी गाना। और गाना सुना दूगी तो नाचने का कहोग।

जगन्नाथ आज मरी किस्मत ही रूठी लगती है। (सभी हसतेहैं।) अच्छा जादू का एक खेल दिखा दो।

कल्याणी अभी उसकी जरूरत नहीं। मैं सोने जा रही हू। (प्रस्थान।)

जगन्नाथ मैं तीन सप्ताह बाद फिर मिलूगा। (सभी को नमस्कार करता है।) दरअसल मै जाना नहीं चाहता। (सुजाता से) आप इस बगीचे के बारे म फिर सोचिए। यदि मरी योजना आपको पसन्द आ जाय तो मै ६० ६५ हजार तक कज दिला सकता हू। इस पर अच्छी तरह सोच विचार कर लीजिए।

उत्पला आप जाइएगा भी ?

जगन्नाथ (उत्पला को देखकर) मैं जा रहा हू, जा रहा हू। (प्रस्थान)

रणवीर ओह, माथा चाट लेता है। उत्पला को चोट लग गयी। क्यों?

उत्पला मामा, बेजरूरत यह सब कहने से क्या फायदा।

सुजाता उत्पला, मुझे तो यह जोडी पसन्द है। बुरा क्या है। जगन्नाथ बडा ही अच्छा आदमी है।

गोवधन अच्छा आदमी है — यह तो मानना ही पडेगा। बहुत अच्छा आदमी है—मेरी लडकी भी यही कहती है। वह ता जाने क्या-क्या कहती है। **(उसे एक झपकी आ जाती है। पर तुरत जग जाता है।)** हा, सुजाता देवी। मुझे दो सौ चालीस रुपये कज दीजिए। कल मुझे सूद की रकम चुकानी है।

उत्पला **(चौंककर)** लेकिन हम लोगो के पास रुपये कहा है।

सुजाता उत्पला ठीक कहती है! मेरे पास कुछ नही है।

गोवधन कोई-न-कोई रास्ता निकलेगा ही। **(हसता है)** मैं कभी निराश नही होता। कभी कभी मुझे ऐसा लगता है कि सब कुछ गया, मैं खतम हुआ। और दखो तमाशा—मेरी जमीन रेलवे खरीद लेती है मुझे पसा मिल जाता है। आज नही तो कल कुछ-न कुछ होगा, कोई-न कोई रास्ता निकल ही आवेगा। शायद मरी बेटी क्रासवड पज्ल म एक लाख रुपया जीत ले। वह हमेशा क्रासवड पज्ल **(झपकी आ जाती है।)**

सुजाता काफी खतम हुई अब जाकर थाडा आराम करूगी।

रामनाथ आपने फिर यह दूसरा वाला पजामा पहन लिया। ओह।

उत्पला **(धीमी आवाज मे)** काति सोई है। **(खिडकी के पास जाकर)** सूरज निकल आया है। अम्मा देखा, य पेड कस सुहाने लग रहे हैं। **(सास लेती हुई)** कैसी हवा। ओह कितना मनोहर, कितना अनुपम!

रणवीर **(दूसरी खिडकी खोलकर देखते हुए)** सारा बगीचा महमह कर रहा है। तुम्हे याद है सुजाता। यह पगडडी कितनी सीधी है, सफेद तने हुए फीते की तरह। और चादनी रात मे किस तरह चमकती है। याद है? भूल तो नही गई?

सुजाता **(खिडकी के पास जाकर)** आह मेरा बचपन। मेरा भोला बचपन। मैं इसी कमरे मे सोया करती, यही से बगीचे को देखा करती और प्रतिदिन मैं कितना प्रसन्न रहा करती। उन

दिनो भी यह बगीचा ठीक ऐसा ही दीखता था। एकदम नही बदला, कुछ भी नही। मजरिया स लदा, मह मह करता। आह रे मेरा बगीचा। (हसती हुई।) ठिठुरत जाडे के बाद वसन्त के आते ही तुम्हारी काया पलट जाती है, तुम चहक उठने हो एक स्वर्गीय आभा से जगमग करन लगते हो। (कुछ रुक कर) काश। मर सीन पर से यह बोझ उतर जाता, बीते दिना की याद भूल जाती।

रणवीर हा और देखो न। क्या तमाशा है कि कज चुकाने के लिए अब यह बगीचा नीलाम होने जा रहा है।

सुजाता वह देखो। फूल की डाली हाथ मे लिए अम्मा जा रही है वह। वहा।

उत्पला अम्मा।

रणवीर कहा?

सुजाता (हसकर) नही कोई नहा है। मुझ धोखा हो गया। वहा, पगडडी के दाहिन वह छोटा-सा पेड है न लगता है कि कोई औरत खडी है जरा-सा झुकी हुई ठीक अम्मा की तरह।

[अनिल कुमार अनल का प्रवश। चेहरे पर चेचक के दाग कपड-लत्त बहुत मामूली चश्मा पहने है।]

सुजाता हाय रे बगीचा। मजरिया के बोझ से लदा पीछे नीला आसमान

अनिल सुजाता देवी, मैं सिफ नमस्कार करन चला आया। मुझ कहा गया था कि आज मैं नही मिलू तो अच्छा पर मरा धय साथ नही द रहा था।

उत्पला अम्मा यह अनिल कुमार जी अनल हैं।

अनिल जी मैं अनल हू रोहित को पढाया करता था। क्या मैं बहुत बन्ल गया हू ?

[सुजाता उत्पला से लिपट रोती है।]

रणवीर सुजाता।

उत्पला (रुआसी होकर) आपको मना किया था न।

सुजाता रोहित! मेरा नन्हा!! मेरा बेटा।

उत्पला अम्मा, ईश्वर की वही इच्छा थी।

अनिल (सात्वना देते हुए) सुजाता देवी। सुजाता देवी!!

सुजाता (मौन रुदन करती हुई) मेरा नन्हा बेटा डूब गया, मुझसे छीन लिया गया। क्यो? क्यो? (सम्हलती हुई।) कान्ति सोई है और मैं यहा शोर मचा रही हू। हा अनिल, तुम्हारी यह क्या हालत हो गयी? ऐसे क्यो दीखत हो?

अनिल मैं आ रहा था तो गाडी म एक औरत ने मुझे देखकर कहा—दीमक चाट गया है। (हसता है।)

सुजाता उन दिना तो तुम बडे अच्छे दिखते थे। तुम्हारे बाल भी उड चले, चश्मा पहनने लगे हो। क्या अब भी पढ रहे हो? (दरवाजे के पास जाती है।)

अनिल मैं तो उम्र भर विद्यार्थी ही रहूगा।

सुजाता अच्छा, जाकर थोडा आराम करो। तुम्हारे भी बाल पक चले भया। क्या?

गोवधन तो आप सोने जा रही हैं। अब। साला गठिया, मैं तब तक नही ठहरता हू। और सुजाता देवी, वो दो सौ चालिस रुपये देने ही पडेंगे।

रणवीर कसा जोक जसा चिपक जाता है।

सुजाता लेकिन मेरे पास पैस कहा हैं?

गोवर्धन मैं वापस कर दूगा। और छोटी सी तो रकम है। दो सौ चालीस रुपये।

सुजाता अच्छा रणवीर भैया दे देंगे। आप उ ह दे दीजिएगा भया।

रणवीर जरूर। जरूर।

सुजाता दूसरा चारा क्या है ? उन्हें जरूरत है। ये वापस कर देंगे।

[सुजाता, अनिल, गोवर्धन और रामनाथ जाते हैं तिनकौड़ी, उत्पला और रणवीर रह जाते हैं।]

रणवीर पैसे फूंकने की आदत छूटी नहीं। (तिनकौड़ी से) रास्ते से हटो न। लहसुन की गंध आती है।

तिनकौड़ी मालिक, आप जरा भी नहीं बदले हैं।

रणवीर क्या कहा ?

उत्पला (तिनकौड़ी से) तुम्हारी मां गांव से आई है। कल से तुम्हारा इंतजार कर रही है। नीचे बैठी है।

तिनकौड़ी बुढ़िया सर खा जाती है।

उत्पला तुम्हें शर्म नहीं आती।

तिनकौड़ी क्या जरूरत थी। कल आती तो क्या बिगड़ जाता। (प्रस्थान)

रणवीर जानती हो यदि एक बीमारी के सौ नुस्खे हों तो उसका क्या मानी होता है ? उसका मानी है कि मर्ज लाइलाज है। मैं सर मार रहा हूं और हजारों रास्ते ढूंढ़ निकालता हूं पर इसका मानी है कि कोई रास्ता नहीं है। यदि कोई हम लोगों का पैसा दे देता, या शान्ति की शादी किसी धनी परिवार में हो जाती या हममें से कोई जाकर बनारस वाली मौसी के पास कोशिश करता, जानती हो न कि उनके पास सारा रुपया है।

उत्पला (रोनी आवाज में) भगवान कृपा करें तो

रणवीर यह कल्पना बन्द करो। मौसी के पास बहुत पैसा है पर हम लोगों को नहीं चाहतीं। एक तो सुजाता ने रईस से शादी न कर वकील से शादी कर ली।

[शान्ति अपने कमरे के दरवाजे के पास आती है।]

उसने उस आदमी से शादी की जो खानदानी नहीं था और

फिर सामाजिक दृष्टि से उसका आचरण भी जरा ठीक नहीं रहा। वसे चाहे जो कहो ! वह बहुत अच्छी, भली और प्यारी-प्यारी-सी है। मैं उसे बहुत प्यार भी करता हू लेकिन यह तो मानना ही पडेगा कि नैतिक दृष्टि से वह जरा ढीली-ढाली है। उसकी हर बात

उत्पला (धीरे से) कान्ति दरवाजे के पास है।

रणवीर ? (रुक कर) क्या तमाशा है। मेरी दाहिनी आख म जाने क्या पड गया है कुछ दिखाई ही नही पडता। और पिछने वृहस्पतिवार को जब मैं कचहरी गया था

[कान्ति पास आ जाती है।]

उत्पला तुम सो क्या नही जाती ?

कान्ति नीद नही आती।

रणवीर (कान्ति से) मेरी नन्ही भोली बच्ची। इधर आओ। जानती हो, तुम सिफ मेरी भाजी नही, मेरी समस्त आशा-अभिलाषा हो। विश्वास मानो।

कान्ति मैं विश्वास करती हू। सभी कोई आपका आदर करता है, आपको प्यार करता है पर मामा ! आपको इतनी बात नही करनी चाहिए। आपको चाहिए कि चुप रहन की कोशिश करें। अभी आप अम्मा के बारे मे, अपनी सगी बहन के बारे मे क्या कह रह थे ? क्या कह रहे थे ?

रणवीर तुम क्या कहती हो। बिल्कुल ठीक। ओह। और आज किताबो के शेल्फ के सामने जो मै बक गया कितना बडा मूख हू मैं। जब मैंन खतम किया तब मुझे मेरी मूखता समझ म आई।

उत्पला हा मामा। आपको चुप रहने की कोशिश करनी चाहिए। सिफ चुप रहिए और कुछ नहीं।

कान्ति आप चुप रहकर देखिए, स्वय आपको कितना आनन्द मिलेगा।

रणवीर मैं चुप रहू गा, जरूर चुप रहू गा। मैं अब बकबक नही करूगा।

कभी नही। लेकिन एक जरूरी बात कहनी है। पिछले वहस्पतिवार को जब मैं कचहरी गया तो कुछ दोस्तो से बातचीत की और मुझे कुछ ऐसा लगा कि बैंक का सूद चुकाने के लिए कुछ रुपये कर्ज मिल सकते हैं।

उत्पला भगवान की कृपा हो तो

रणवीर मैं फिर मंगलवार को जाऊंगा और बातचीत करूंगा। (उत्पला से)कलपो मत। (कांति से)तुम्हारी अम्मा जगनाथ से कुछ रुपया कर्ज ले लेगी। वह सुजाता को नही नही कह सकता। और दो एक दिन आराम कर लेने के बाद तुम बनारस वाली काकी के पास चली जाना। इस तरह हमलोग तीन ओर से हमला करेंगे और किला फतह। मुझे पूराविश्वास है कि हम लोग सूद चुका देंगे (पान निकालकर खाता है।)मैं भगवान की सौगंध खाकर कहता हूं जिस चीज की कहो, उसकी सौगंध खाकर कह सकता हूं कि नीलाम नही होने दूंगा। (उत्तेजित होकर) मुझे रौरव नरक मिले अगर यह नीलाम होने दूं।

कांति (शांत स्वर मे)आप कितने अच्छे हैं मामा और कितने समझदार। अब जाकर मुझे कुछ शांति मिली है।

[रामनाथ का प्रवेश]

रामनाथ आपको कुछ दीन-दुनिया की भी खबर है? कब जाकर आराम करेंगे?

रणवीर तुरत तुरत। तुम जाओ न। मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं। अच्छा बेटी, अब जाकर आराम करो, फिर बात करेंगे। जानती हो कि मैं किस युग का आदमी हूं। लोग मेरे जमाने का मजाक उड़ाते हैं। लेकिन मैं कह सकता हूं कि अपने विश्वासो के लिए मैंने भी बहुत कुछ सहा है। यही किसान मुझ पर जान नही देते। उनको समझो तो उनको

पहचानो तो।

कान्ति आपने फिर शुरू किया मामा।

उत्पला आपको चुप रहना चाहिए।

रामनाथ ए मालिक !

रणवीर अभी आया, अभी आया। वह घोडे का शह और मात।

[रणवीर उठकर जाता है और रामनाथ उसके पीछे पीछे बुदबुदाता जाता है।]

कान्ति अब जाकर मुझे शांति मिली है। बनारस जाने का जी नही करता। वह नानी मुझे जरा भी नही सुहाती। लेकिन मैं उसकी चिंता नही करती। मामा के हम लोगो पर बडे एहसान हैं। (बैठ जाती है।)

उत्पला मैं थोडा आराम कर लू तो अच्छा। आ यह तो कहा ही नही। जब तुम लोग नही थी तो यहा अजब तमाशा हो गया। नौकरो के कमरो मे तीन चार नौकर ही रहते हैं बस दीनू मनभरण, तोताराम और रतिलाल। वे लोग कुछ लुच्चे लफंगे को लाकर सुलाने लगे। मैं फिर भी चुप रही। लेकिन मुझे पता चला कि उन लोगो ने मेरे बारे मे तरह-तरह की बात फैला रखी हैं। मैं लोगो को भरपट खाना भी नहीं देती, मैं खुद बडी छिछोरी हू। तोताराम ही इनकी जड था। मैंने मन म कहा—अच्छा, ठहरो। मैंने तोताराम को बुलाया। मैंने पूछा—गदहा कही का यह सब क्या है? (कान्ति के पास जाती हुई) अरे मेरी रानी सो गई। (बांह पकड कर उठाती हुई) चलो, चलकर सो जाओ। (वह कान्ति के कमरे के दरवाज के पास जाती है। नेपथ्य से चरवाहों का गीत उभरता है। अनिल कमरे मे दाखिल होता है।)

उत्पला (दबी आवाज मे) श श श सो गई ह।

कान्ति मैं इतनी थक गई हू। दिमाग म जैसे घटिया बज रही हैं
उत्पला *मेरी रानी, आओ। (दोनों कान्ति के कमरे मे जाती है।)*
अनिल कान्ति, मेरे भाग्याकाश का सितारा। मेरे वसन्त की अगडाई।

[पर्दा गिरता है।]

दूसरा अक

[सुजाता दवी के मकान का पीछे का हिस्सा। मच के एक कोने म एक टूटा मक्वरा ह और उसी आर पीछे की तरफ एक पुराना कुआ। कुए के पास से एक पगडडी निकल गई है। एक ओर दूरी पर तार के खभे दिखाई पडत है।

मक्वर के विपरीत एक टूटा बेंच पडा ह। कभी-कभी यह भी सुजाता देवी की फुलवाडी का एक ही हिस्सा रहा हो। पर अब एकदम उजाड और वीरान है।

सूरज डूबने ही वाला है। कल्याणी, सोनिया और तिनकौडी बेंच पर बठे हैं। मकबरे के पास गदाधर राम एकतारा बजा रहा है और गा रहा है।]

कल्याणी भगवान जान, मेरी क्या उम्र हुई मैं तो सोचती हू कि अभी बच्ची ही हू। जब छोटी थी तो मा-बाबू जी सरकस मे खेल किया करते थे, शहर शहर घूम कर। और मैं मौत के कुए मे बाबू जी के साथ मोटर साइकिल पर घूमा करती थी। कैसा मजा आता था। बनारस आकर उनका देहान्त हो गया। एक विधवा बगालिन ने मुझे पाला-पोसा, बडा किया और सुजाता देवी के साथ लगा दिया लेकिन मैं कौन हू, कहा से आई, मुझे कुछ नही मालूम। मेरे मा-बाप कहा से आये, उनकी जाति क्या थी, कुछ नही जानती। (एक खीरा निकाल कर खाने लगती है।) मुझे कुछ नही मालूम। (रुककर) किसी से बातें करने को मैं मरी जा रही हू पर

मुझसे बातें करने वाला कोई नही। मेरा कोइ नही।

गदाधर (एकतारा बजाकर गाते हुए) सितार बजाने मे क्या मजा ह।

सोनिया (बालो का जूडा ठीक करती हुई) सितार नही, एकतारा है। (फिर गाने लगता है।)

गदाधर जो प्यार करते हैं उनके लिए यह सितार ह। (गाता है।)

कल्याणी असह्य। कैसा गधे की तरह रेंकता ह।

सोनिया (तिनकौडी से) तुम्हारा भाग्य अच्छा था, बम्बई से हो आये।

तिनकौडी जरूर, इसम क्या शक ह। (जम्हाई लेकर बीडी सुलगाता है।)

गदाधर ठीक बात, सोलह आने पक्की बात। बम्बई म तो सब कुछ शानदार ह मेरा मतलब है यानी बम्बई की बात ही क्या।

तिनकौडी हा।

गदाधर वसे मैं बडा शरीफ आदमी हू। तरह तरह की किताबें भी पढता हू। लेकिन मेरा मतलब है यानी मुझे यह पता नही चलता कि मेरा क्या होने वाला ह, मेरी नाव किधर जा रही ह।

कल्याणी खीरा खतम हुआ और मैं चली। (गदाधर राम के निकट जाकर) हा गदाधर राम तुम बहुत शरीफ हो और उतने ही भयानक भी। औरतें तो तुम पर जान देती होगी। (मुह चिढ़ाती है।) ये शरीफ लोग कितने बडे गधे हैं। ओह! मैं बिलकुल अकेली हू, मेरा कोई नही। मैं किसी से बात करना चाहती हू पर मेरा कौन है? मैं कौन हू, मैं क्यो जिन्दा हू *(धीरे धीरे चली जाती है।)*

गदाधर साफ-साफ कहू? और मैं सिर्फ काम की बात करना चाहता हू। मेरा मतलब है यानी मुझे ऐसा लगता है कि मेरी

किस्मत मुझ पर जरा भी रहम नहीं करती। जैसे तूफान एक छोटी-सी नाव को झक्झोर दे। अब देखो न। सुबह नींद खुली तो देखा कि इतना बडा मकडा मेरे सीने पर इस तरह बैठा है। (हाथ से बताता है।) या पानी पीने के लिए ग्लास उठाया तो उसमें जरूर एक न एक कीडा बैठा होगा। कुछ नहीं तो चींटी ही। (कुछ रुक कर) चन्द्रकान्ता सतति पढा है। (रुक कर) एक बात कहूं सोनिया ?

सोनिया कहो।

गदाधर कान मे कहना चाहता हूं।

सोनिया पहले, देख आओ की मालिक लौटे या नहीं।

गदाधर ठीक। समझ गया समझ गया। (प्रस्थान)

तिनकौडी बेचारा ! एक नम्बर का गधा है।

सोनिया मुझे डर लगता है कि कहीं कुछ कर न बैठे। मैं जब इस घर में आई तब नन्ही-सी थी। अब तो मेरी दुनिया ही बदल गई है। मैं आया-सी नहीं दीखती। मेरे हाथ इतने साफ हो गए हैं मेरा दिमाग बदल गया है। लगता है जैसे मैं भी किसी रईस घराने की बेटी हूं। और मुझे हर समय एक डर लगा रहता है—हर चीज का डर। तुमने मुझे धोखा दिया तो भगवान जाने मेरा क्या होगा।

तिनकौडी (हाथ मे हाथ लेकर) मेरी गुलाबछडी। देखो, मैं कहता हूं कि लडकी को अपना दिमाग अपने काबू में रखना चाहिए। जिस लडकी का दिमाग उसके काबू में नहीं वह मुझे अच्छी नहीं लगती।

सोनिया मैं तो तुमसे प्रेम करती हूं तुम नाम भी लिख लेते हो, दुनिया-जहान् घूम आये हो।

तिनकौडी (जम्हाई लेते हुए) मेरी समझ से अगर कोई लडकी किसी से प्रेम करती है तो वह आवारा है। (उठकर टहलने लगता

है।) ओह यहा खुल म बीडी पीता कोई इधर आ रहा है। अर मालकिन भागो भागो इधर स। कही उन लोगो न दख लिया ता मुझे भी तुम्हारी ही तरह आवारा समझेगी।

सोनिया ओह उस बीडी की गध के मार मरा सर चक्कर खा रहा ह (*प्रस्थान*)।

[तिनकौडी मकबर से कुछ हट कर बठ जाता है। सुजाता रणवीर और जगन्नाथ का प्रवेश।]

जगन्नाथ देखिए, एक बार इधर या उधर फमला कर लीजिए। मेरा ता सीधा सा सवाल है एक शब्द मे जवाब हो सकता है। बस आपको सिफ एक शब्द कहना है – हा या ना। बोलिये।

सुजाता यहा कौन बीडी पी रहा था। (*बेंच पर बैठ जाती है।*)

रणवीर दखा, माटर के कितन फायदे है। जरा तबियत हुई और चले गय शहर। होटल मे खाया और फिर वापस। वह घाडे का शह और मात।

जगन्नाथ सिफ एक शब्द ता कहना है। (गिडगिडाते हुए) कुछ जवाब ता दीजिए।

रणवीर (जम्हाई लेता हुआ) क्या कहत हा?

सुजाता (अपना बटुआ देखती हुई) कल मेरे पास अच्छी खासी रकम थी और आज नाम की कुछ रह गयी है। बचारी उत्पला खच कम करन क पचास उपाय करती है नौकरो को यह मत दो वह मत दा। और मै इस तरह पसे फेंका करती हू। (बटुआ हाथ से गिर जाता है और रुपये गिर जाते है।) लो, अब सारा पसा बिखर गया।

तिनकौडी मैं चुन देता हू। (बटुआ लेकर पैसे चुनता है।)

सुजाता बकार होटल गई। वह तुम्हारा रस्तरा बडा बुरा था भया।

सस्ते गान और मेजपोशो से साबुन की गध। क्या यह जरूरी है कि इतना खाया जाय। जरा सोचो तो आज रेस्तरा म तुमन कितना बकबक किया और सब बेकार, बिना मतलब का। उस जमाने की अच्छाई-बुराई की चचा और वह भी रेस्तरा के वेटर से।

जगन्नाथ हा जरा सोचिए।

रणवीर (हाथ हिलाता हुआ) ओह मेरी आदत मुझे मालूम है। (तिनकौडी से) क्या कर रहे हो सामने मे। हटो न।

तिनकौडी जी (हस देता है।)

रणवीर या ता यह यहा से हटे या मै।

सुजाता (हसकर) जाओ तिनकौडी। जाओ।

तिनकौडी मैं तो जा ही रहा हू। (प्रस्थान)

जगनाथ जानते ह वह लखपति रामटहल चौधरी खुद नीलाम म आएगा। वह आपकी जायदाद खरीदना चाहता है।

सुजाता तुम्हे कैसे मालूम हुआ ?

जगनाथ पूरे शहर म इसकी चचा है ?

रणवीर बनारस वाली काकी हम लोगा को कुछ रुपया भजन वाली है। लेकिन कब और कितना नही मालूम नही।

जगनाथ कितना भेजेगी एक लाख, डढ लाख ?

सुजाता नही दस या पद्रह हजार। इसी क लिए उनका एहसान मानना चाहिए।

जगनाथ माफ कीजियेगा लेकिन कहना ही पडता है कि आप लोगो की तरह का आदमी मने नही देखा—झक्की सनकी। आपको साफ-साफ कहा जा रहा है कि आपकी पूरी जायदाद नीलाम होने जा रही है और आपकी समझ मे ही बात नही आती।

सुजाता तो बताओ न भाई क्या करें ?

जगनाथ पचास बार तो कह चुका हर रोज वही बात कहता हू। इस

सारे बगीचे को पच्चीस पचास सौ वष के लिए किराये पर उठा दीजिय और अभी जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी। नीलाम होने मे कितनी दर है ? जरा बात तो समझने की कोशिश कीजिय। एक बार आप फसला कर लें ता जितना रुपया चाह आप को कज मिल सकता है और आपका रास्ता साफ।

सुजाता लेकिन छोटे छोटे बगले और वह शोरगुल। मुझे तो बडा भददा लगता है।

रणवीर ठीक कहती हो मुझे भी बडा बुरा लगता है।

जगनाथ आह मुझे एस लगता है कि म बेहाश होकर गिर पडूगा, चीखने लगूगा, पागल हा जाऊगा। आप लागा न तो मुझे थका कर परेशान कर दिया है। (रणवीर से) आप ता बुढिया की तरह बात करते हैं।

रणवीर क्या कहा ?

जगनाथ बुढिया की तरह बातें करत ह। (जाने लगता है।)

सुजाता नही मत जाओ ठहरो,। शायद कोई रास्ता निकल आये। हम लोग कुछ सोच तो सकत है।

जगनाथ बेकार की बात है।

सुजाता ठहरो न। तुम रहत हो ता जस सब कुछ बर्दाश्त क लायक रहता है। (रुक कर) मुझे लगता है कि एक बडा काड होने वाला है जसे यह मकान टूट कर हम लोगा के सर पर गिरने वाला है।

रणवीर (गभीर चिंता मे) यह घोडे की शह और मात।

सुजाता हम लोगा न बहुत पाप किय हैं

जगनाथ पाप ? क्या पाप किय हैं ?

रणवीर (जब से पान का डब्बा निकालता है डब्बा खाली है।) लाग कहते हैं कि मैं सब कुछ बेचकर पान खा गया। (हसता है।)

सुजाता मेरा पाप। यही दखो, किस तरह मैं पैस बर्बाद करती रही हू,लगातार। पागलपन नही तो और क्या है। और फिर शादी ऐसे आदमी से की जिसे शराव पीना और कज लेना ही आता था। शम्पेन न उसकी जान ली। उसके वाद। तुमस क्या छिपा है, म प्रेम म फसी। और ठीक उसी समय तकदीर ने भाला मारा मेरा वच्चा नदी मे डूब कर मर गया मैं यहा से भागी। मैं कभी लौटना नही चाहती थी,इस नदी को देखना नही चाहती थी। पागला की तरह मैं भागी और वह मेरे पीछे लगा। ओह उसने कसी निदयता की। वह बीमार पडा और मुझे पूना के निकट मकान खरीदना पडा। तीन वर्षों तक रात दिन खटती मरती रही। एक क्षण के लिए चन नही। वह बीमार जो था। म घबरा गयी। उसन मुझे परशान कर दिया। तव पिछने साल कज चुकान के लिए मकान बेचना पडा। मैं बम्बई आयी और मेरे सार पसे लेकर वह चम्पत। घर लौटने, अपनी बच्ची और बगीचे के बीच लौट जान के लिए मैं तडप उठी मेरे पाप क्षमा कर दो। अब नही। (कुछ रुक कर) बम्बई स तार आया है। वह माफी चाहता है। चाहता है कि म लौट जाऊ (तार फाडती हुई) कही गाना सुनाई पडा रहा है। (सुनती है।)

रणवीर वह भिखमगा एकतारा लकर आता था, वह वष्णव भिखमगा याद है? वही है।

सुजाता अभी तक बूढा जिंदा है? एक दिन उसको बुलवा कर वैष्णाव गीत सुनना चाहिए।

जगन्नाथ मुझे तो कुछ नही सुनाई पडता (गाना है। सहसा हस कर) कल वडा अच्छा सिनेमा देखा। मजा आ गया।

सुजाता सिनमा म क्या मजा आयेगा। मैं कहती हू कि सिनेमा दखने के वदले अपनी ओर क्या नही देखन? जरा सोचो तो, तु

वसी जिन्दगी गुजार रहे हो कितनी सूखी, कितनी बेजान।

जगन्नाथ ठीक कहती हैं। म मानता हू। हम लोगो की जिन्दगी म कुछ नहीं रखा है (कुछ रुक कर) मरा बाप बनिया था, मोटी अक्ल वाला। उसकी समझ म कुछ नही आता। उसने मुझे एक अक्षर नही पढाया। सिफ ताडी पीकर खजूर की छडी से पीटा करता। और मैं भी क्या हू? वसी ही मोटी बुद्धि वाला। किसी न मुझे कुछ सिखाया नही, मेरी लिखावट भयकर है। किसी को दिखान म लाज लगती है एकदम गधे जसी।

सुजाता तुम्हे अब शादी कर लेनी चाहिए।

जगन्नाथ हा आप ठीक कहती हैं।

सुजाता उपला से क्या नही शादी करत। वडी अच्छी लडकी है।

जगन्नाथ हा।

सुजाता मामूली खानदान की है जरूर लेकिन वडी मेहनती है। सुबह से शाम तक बल की तरह खट सकती है। और फिर तुमको पसद भी है। क्या क्या म गलत कहती हू।

जगन्नाथ नही आप ठीक कहती है।

[कुछ क्षणा तक सभी चुप रहत है।]

रणवीर तुमने सुना है कि नही मुझे बक वाले १५०० की नौकरी दे रहे हैं।

सुजाता हा सुना तो है। लेकिन तुम भला नौकरी क्या करोगे।

[पान का डब्बा हाथ म लिए रामनाथ का प्रवश।]

रामनाथ मालिक पान का डब्बा।

रणवीर वाह रे रामनाथ।

रामनाथ आप सुबह निकल गये और वताया भी नही। पान का डब्बा रखा ही रह गया।

सुजाता रामनाथ, ओह तुम कितने बूढे हो गए हो।

रामनाथ हुकुम मालकिन ?

जगन्नाथ (जोर से) सुजाता देवी कहती है कि तुम कितने बूढ़े हो गये हो।

रामनाथ हां बहुत दिनों से जी रहा हू तुम्हारे बाप के जन्म के पहले ही मेरी शादी ठीक हो रही थी (हसता है) और जब पैसा जमाकर लाग दूकान और जमीन खरीद रहे थे, मैं बड़ा खानसामा हो चुका था। मैं भला मालिक मालकिन को छोडकर कहा जाता ? मैं यही रह गया (रुक कर) मुझे याद है सब लोग नाचते थे, खुश होते थे। लेकिन क्यो मेरी समझ में आज तक नही आया।

जगन्नाथ लोगों ने जमीन खरीद ली अपने खेत आप जातने लगे।

रामनाथ (बिना सुने) आह वे दिन कम थे। जमींदार किसान को प्यार करते किसान जमींदारों पर जान देता। एक दूसरे के बिना जीना मुहाल। पर अब तो सब अलग अलग दीखते हैं, कोई किसी की परवाह नहीं करता।

रणवीर चुप भी रहो रामनाथ। कल मैं शहर जाऊगा। एक व्यापारी से बातचीत करनी है। रुक्का लिख देने पर वह रुपये दे देगा।

जगन्नाथ इन सबसे कुछ नही होगा सूद के रुपये नही चुका सकियेगा।

सुजाता (हस कर) भैया मजाक कर रहे है। शहर में कौन इतना बड़ा व्यापारी है ?

[अनिल, उत्पला और कांति का प्रवेश।]

रणवीर ये देखो, कौन आ गये ?

कांति अम्मा तो यहां बैठी हैं।

सुजाता आओ बेटी आओ। ओह मैं तुम दोनों को कितना प्यार करती हू। जानती हो। मेरे पास बैठो, यहां।

[सभी बैठते हैं।]

जगन्नाथ यह हमारे चिर विद्यार्थी हमेशा लडकियो के साथ ही घूमते हैं।

अनिल तो तुम क्या परशान हुय जात हो ?

जगन्नाथ उम्र पचास क करीब आ पहुचा और अभी भी विद्यार्थी ही हैं।

अनिल आह, ये भद्दे मजाक बन्द करो न।

जगन्नाथ तो बिगडत क्या हो ? अजब आदमी हो।

अनिल क्या इस तरह मुझे परशान करत हो ?

जगन्नाथ (हस कर) अच्छा, एक बात पूछता हू मेरे बारे म तुम्हारी क्या राय है ?

अनिल श्रीयुत जगन्नाथ चौधरी जी, आपके बारे म मेरी राय बस यह है कि आप बहुत धनी है, आपके पास अभी ही बहुत पैसा है और बहुत जल्द आप लखपति करोडपति हो जायेंगे। परजसे सामने आन वाली हर चीज को खाकर एक चीज से दूसरी चीज म बदलने वाला जगली जानवर उपयोगी है उसी तरह आप भी है।

[सभी हसत है।]

उत्पला अनिल जी, ग्रह नक्षत्र क बारे म कुछ कहिय।

सुजाता नही कल जो कह रह थ, वही

अनिल कल हम लोग किस चीज पर बात कर रह थ ?

रणवीर अभिमान पर।

अनिल हम लोगो ने कल दुनिया भर की बातचीत की पर किसी बात पर सहमत नही हो सके। अभिमान, जसा कि आप समझते है जरा रहस्यात्मक लगता है। हो सकता है, इसमे सत्य का भी कुछ अश हो। पर जरा सीधी तरह सोचिए बिना बाल की खाल निकाले, तो यह प्रश्न सामने आता है कि किस बात का अभिमान ? जब यह सोचता हू कि मनुष्य जाति शारीरिक बनावट की भी दृष्टि से इतनी अच्छी नही और फिर

अधिकाश लोग भीड, मूढ और दुखी है तो अभिमान करने के लिए हमारे पास क्या है ? हम लोगो को आत्म प्रशसा बन्द कर सिर्फ काम करना चाहिए, सिर्फ काम ।

रणवीर मरना तो फिर भी पडेगा, चाहे जो करो ।

अनिल कौन जानता है ? और फिर मरने का क्या अर्थ है ? हो सकता है कि मनुष्य की सौ ज्ञानेन्द्रिया हो मरने पर जिन पाच को हम जानते है वे ही नष्ट होती है बाकी उसके बाद भी जीवित रहती हैं ।

सुजाता ओह, क्या पते की बात कही है ।

जगन्नाथ (ताने के स्वर मे) बडे पते की ।

अनिल इन्सान के कदम हर घडी आगे बढ रहे हैं अपनी शक्ति की सपूर्णता की ओर ले जा रहे है । आज जो कुछ भी हमारी शक्ति की परिधि के बाहर है, एक-न-एक दिन उसके भीतर आएगा । हा, उस दिन के लिए हमे अपनी सारी ताकत लगा देनी होगी घोर परिश्रम करना होगा, उन्हे मदद करनी होगी जो सत्य की खोज मे लगे हैं । हमारे देश म मुट्ठी भर लोगा न भी शायद ही इस दिशा म कदम उठाया है । जितने पढे लिखे बुद्धिवादी लोगो को मैं जानता हू, किसी चीज की परवाह नही करते, कुछ काम नही करत, कर नही सकत । व लोग अपने को सिर्फ बुद्धिवादी कहते हैं । लेकिन घर के नौकरो को नीची नजर से देखत है, किसानो के साथ जानवरा-जसा व्यवहार करत है । पढते है पर कुछ हाथ नही लगता । कोई गहरी चीज पढ नही सकने कुछ नही करत । विज्ञान । इसकी सिर्फ चर्चा करते हैं पर न तो कला समझ म आती है, न विज्ञान । बडे महान दीखते है गभीर चेहरा बनाए इधर-उधर घूमते हैं, बडी-बडी बात सोचते विचारते हैं, सिर्फ दर्शन छाटते हैं । लेकिन हर घडी आप नजर उठाकर देख

सकते हैं कि जो मेहनत करने वाले हैं उन्हें कितना खराब भोजन मिलता है—सोने की बिछावन नहीं, खटमलों से भरे एक एक कमरे में एक एक परिवार, गन्दगी, धूल, बदबू, अनाचार, यही तो उनके चारों ओर है। यह तो साफ ही है कि हम लोगों की ये बड़ी बड़ी बातें अपने को और दुनिया को धोखा देने के लिए हैं। बताइए, कहा है पढ़ने के वे कमरे, कहा है—सिर्फ उपन्यासों में देखने को मिलेंगे। जीवन में नहीं। जीवन में तो धूल पशुता, कुरीतियां—इन गंभीर चेहरों से मुझे डर लगता, मुझे ये अच्छे नहीं लगते, इनकी बड़ी बड़ी बातों से मैं घबराता हूं? इससे तो अच्छा है कि हम लोग सिर्फ चुप रहें।

जगन्नाथ मैं बताऊं, मैं सुबह चार बजे जग जाता हूं। उस समय से रात तक काम करता हूं। मेरे हाथ में अपने और दूसरों के भी पैसे रहते हैं अपने चारों ओर के लोगों को जानने के पचासों मौके हाथ आते हैं। लेकिन आप कोई काम शुरू करिये और आपको पता चल जाएगा कि सच्चे और ईमानदार लोग कितने कम हैं। जब नींद नहीं आती है तो मैं जगा जगा सोचता हूं—ईश्वर ने हम लोगों को क्या दिया, ये लहराते जंगल खेतों का यह फैला आंचल, यह नीला आसमान। ऐसे देश में रहने वालों को तो दानव सा

सुजाता दानवों से हमें क्या लेना देना है? उन्हें कहानियों के पन्नों में ही रहने दो।

(रंगमंच की भूमि में गदाधर राम एक-तारा बजाता हुआ निकल जाता है।)

सुजाता गदाधर जा रहा है।

कांति बेचारा गदाधर।

रणवीर हां भाई देखो सूरज डूब चला।

अनिल हा।

रणवीर (जसे कविता पढ रहा हो) ओ अनन्त प्रकाश से मण्डित महा-महिमान्वित प्रकृति, इतनी सुन्दर पर हम मानवों से इतना निर्लिप्त ओ जननि, तुमम जन्म और मरण दोनो निहित ह, तू ही जिलाती और तू ही मारती

काति (प्यार भरी झिडकी से) मामा।

उत्पला आपने फिर शुरू किया मामा।

अनिल आप घोडे का शह दीजिए और मात।

रणवीर लो मैं चुप हो जाता हू, एकदम चुप।

[सभी चुपचाप बैठते है। रामनाथ की बुदबुदाहट के अलावा और कुछ सुनायी नही पडता। सहसा दूर कही एक तने हुए रस्से के टूटन की-सी आवाज आती है जा धीरे धीरे अस्पष्ट हो जाती है।]

सुजाता क्या था?

जगनाथ पता नही। शायद नाव खीचने वालो मे से किसी की रस्सी टूटी होगी। लेकिन लगता है काफी दूर पर टूटी है।

रणवीर या शायद कोई चिडिया हो।

अनिल शायद उल्लू।

सुजाता बडा मनहूस जैसा लगा।

रामनाथ उस बार भी एसा ही हुआ था।

रणवीर किस बार?

रामनाथ हुकुम मालिक।

[कुछ क्षणा तक सन्नाटा।]

सुजाता अधेरा हो चला। चलो, घर चलो (काति से) क्या बात है बटी, तुम्हारी आखो म आसू।

काति कोई बात नही है अम्मा। ऐसे ही।

अनिल कोई इधर आ रहा है।

[एक भिखमगा प्रवश करता है जो भिखमग की अपेक्षा लुच्चा अधिक है।]

भिखमगा सरकार इस सडक से टसन पहुच जायेंगे।

रणवीर हा, सीधे चले जाओ।

भिखमगा (खासता है) ओह गर्मी पडने लगी। (गाता है) गगा रे जमुनवा के निमल पनिया से माई वाप, गरीव भूखे को दो पैसा माई वाप।

[डरकर उत्पला चीख उठती है।]

जगनाथ (गुस्से से) हद हो गई।

सुजाता (बटुआ खोलकर टटोलती हुई) पैसा तो नही है, न अच्छा रुपया ही ले जाओ। (भिखमगा सलाम वाप। दोहाई सरकार की। (जाता है।)

उत्पला मैं घर जाती हू। अम्मा आप जानती है कि घर म पैसा नही है और आपने उसे एक रुपया द दिया।

सुजाता जानती हो कि मैं कैसी मूख हू। चलो घर चलकर सब कुछ तुम्हार ही हवाले कर दूगी। जगनाथ चौधरी कुछ रुपये और कज दीजिए। दीजियगा न ?

जगनाथ जरूर, जरूर।

सुजाता चलो, घर चलें। और उत्पला तुम्हारी शादी हम लोगो ने करीव-करीब पक्की कर दी।

उत्पला (रुआसी होकर) अम्मा, आप भी मजाक करती हैं।

रणवीर ओह शतरज खेले कितनी देर हुई।

सुजाता चलो घर चलो।

उत्पला उस भिखमगे ने मुझे ऐसा डरा दिया कि मेरा कलेजा धक धक कर रहा है।

जगन्नाथ सुजाता देवी यह याद रहे कि बाईस माच को यह जायदाद

नीलाम होने जा रही है। जरा सोच लीजिए कि

[अनिल और काति को छोड कर सभी जाते है।]

काति भिखमगे के कारण उत्पला बुरी तरह डर गई।

अनिल उत्पला डरती है डरती है कि कहीं हम लोग प्रेम न करने लगें। इसीलिए हम लोगो के पीछे लगी रहती है। उसका दिमाग इतना छोटा है कि वह समझ नही पाती हम प्रेम से ऊपर उठ चुके है। हम लोगो के जीवन का लक्ष्य, जीवन का अर्थ यह है कि आनन्द और स्वतन्त्रता म जो बाधा डाले, जो कुछ भी ओछा और असत्य हो उसस अपने को अलग रखें। आगे कदम, दूर उस चमचमाते सितारे की ओर आगे कदम। साथी, पीछे न छूट जाना।

काति ओह, तुम कितनी अच्छी तरह कह सकते हो। (रुक कर) यहा आज बडा अच्छा लगता है।

अनिल हा, मौसम बडा सुहाना है।

काति तुमने यह कैसा जादू कर दिया है अनिल। अब इस आम के बगीचे को म उस तरह प्यार नही करती। मैं इस पर जान देती थी, सारी दुनिया मे इससे भी अच्छी जगह कोई हो सकती है मेरे दिमाग म भी नही आता था। और अब।

अनिल यह सारा देश हमारा बगीचा है। यह पृथ्वी महान है, सुन्दर है। यहा एक से एक नायाब जगह है। (कुछ रुककर) काति तुम्हारे दादा, परदादा न गरीबों का लहू चूसा है। क्या इस बगीचे के हर पेड से, हर तने, हर पत्ती स उनके चेहरे घूरते हुए नहीं दिखाई देते? क्या उनकी चीख पुकार नहीं सुनाई पडती? उन लोगो न गरीबो का लहू चूसा है। जोक की तरह और तुम सभी का दिमाग खराब हो गया है—तुम्हारे पूर्वजो का और तुम लोगो का भी। तुम्हारे मामा, तुम्हारी

मा और तुम भी यह नही समझती कि तुम पर उनका कितना कज लदा है। तुम पर उन लोगो का कज लदा है जिन्हे जानवरा से भी कम महत्त्व दिया गया। हम लोग समय से कम से कम दो सौ वष पीछे है, अभी तक हम हम लोगा न भूत के बारे म अपना दिमाग ठीक नही किया है। सिफ दशन की बात करना परेशानी और मुसीबत की चचा करना हम लोगो को आता है। क्या यह स्पष्ट नही कि आज जीने के लिए कल की बात खतम करनी होगी उसकी चर्चा भी बद करनी होगी। जो दिन बीत गये है उनके लिए हमे प्रायश्चित करना पडेगा और उसका एक ही रास्ताहै- अथक अनवरत परिश्रम। इसको समझो काति।

काति जिस मकान म हम लोग है, एक जमाने म यह हम लोगो का नही। मै वादा करती हू म इसे छोड दूगी।

अनिल छोड तो दो ही यदि इसकी चाभिया तुम्हारे पास हो तो उसे भी कुए मे फेक दो। बस उन्मुक्त पवन की तरह बधन हीन हो जाओ।

काति (भावावेश मे) ओह तुम किस तरह कहते हो।

अनिल काति मेरी बातो का विश्वास करो। मेरी क्या उम्र हुई है, अभी तीस भी नही, म विद्यार्थी हू अभी तक पढ ही रहा हू। पर मैंने इतना कुछ देखा है। जाडा आते ही, मैं अधनगा भूखा भिखारी की तरह तकदीर का ठोकरे खाता इधर से उधर मारा मारा फिरता हू। लेकिन हर घनी, उन घोरतम घडिया मे भी मेरी आत्मा विश्वास और भविष्य के सपने से जगमग करती रहती है। सुख मुझे दिखाइ पडता है काति मैं देख रहा हू कि वह सुख आ रहा है

काति चाद निकल रहा है।

[दूर नपथ्य म गदाधर राम एक तारा बजा

रहा है, उसकी आवाज सुनाई पड रही है चाद निकल आया है और नेपथ्य से उत्पला काति काति पुकार रही है ।]

अनिल हा चाद निकल रहा है। (रुककर) वहा हम लोगा का सुख वहा है वह निकट आ रहा है, और भी निकट, मैं उसकी पग ध्वनि सुन रहा हू। और मान ला कि हम लोगा का न भी नसीब हा तो क्या ? दूसरो को ता नसीब होगा। उत्पला की आवाज —काति। काति।

अनिल ओह। यह उत्पला। (गुस्से मे) परेशान कर देती है।

काति चलो हम लाग नदी किनारे चलें।

अनिल चलो हम लोग नदी किनार चले।

अनिल चलो।

[दाना जात है।]

उत्पला की आवाज काति। काति

[पर्दा गिरता है।]

तीसरा अंक

[गुजरा रमी का बटर गया। बटर गया। न मन हुए बड़े हाल में गाने-बजाने का इन्तजाम किया गया है। पर्दा उठने पर गाने की अंतिम कड़ियाँ सुनाई पड़ती हैं और उसके बाद तालियाँ। गवैया पहने गमनाम पान का साफ मसर मंच पर इधर से उधर चला जाता है। उसके पीछे ठुमरी की एक कड़ी गुनगुनाता हुआ गोवर्धन आता है और धम-से एक सोफे पर बैठ जाता है।]

गोवर्धन इस रंगरूप का बुरा हो, दो बार तो धावा कर चुका। और रात का जागरण इसके लिए बड़ा खराब होता है। लेकिन किया क्या जाय। इससे अलग तो कोई नहीं रह सकता। पिताजी कहा करते थे कि घर जाने दो। बस मैं बैल की तरह भोला और मजबूत हूँ और पिताजी कहा करते थे कि यह मेरे परिवार की विशेषता है। (अनिल प्रवेश करता है। सोफे पर टेकते हुए कुछ क्षण ठहर कर) लेकिन मुसीबत तो यह है कि मेरे पास रुपया नहीं। भूखा कुत्ता और क्या सोचेगा। (एक झपकी लेता हुआ एकाध खर्राटा लेता है।) मेरी तो वही हालत है, रुपये के सिवा कुछ सोच ही नहीं सकता।

अनिल आपने ठीक कहा, आपकी शारीरिक बनावट में बहुत कुछ समानता है।

गोवर्धन वाह आप यह क्या कहते हैं। बैल क्या कोई खराब जानवर है? आप उससे खेती कर सकते हैं उसको बेच सकते हैं।

[दूसरे कमरे के दरवाजे पर उत्पला

दिखाई पडती है।]

अनिल वह देखिए, श्रीमती चौधरी, (पुकारते हुए) श्रीमती चौधरी।

उत्पला बूढा कौआ।

अनिल ठीक बूढा कौआ। मैं बुरा नही मानता।

उत्पला (सोचते हुए) गाने-बजाने का इतजाम हुआ है। अब इनको पसा कहा से दिया जाएगा।

[प्रस्थान]

अनिल (गोवधन से) जानते हैं, मुझे लगता है कि जीवन भर सूद चुकाने के लिए पैसा जुटाने मे आपने जितना समय बबाद किया है, उतना समय किसी और काम म लगाते तो आसमान उलट देते।

गोवधन प्रसिद्ध दाशनिक महान पुरुष नीत्से कहता है कि जाली नोट बनाना बिलकुल न्यायोचित है।

अनिल आपने नीत्से पढा है क्या ?

गोवधन नही, मेरी बेटी कहती है। लेकिन अभी तो मैं जिस हालत मे हू कि नोट जाल करने मे भी मन नही हिचकेगा। परसो मुझे तीन सौ दस रुपया सूद चुकाना है। डेढ सौ तो माग लाया हू। (कमर टटोलता है। उसके चेहरे का रग उड जाता है।) क्या हो गया ? गिर गया। (रुआसा होकर) हाय राम। (खुश होकर) नही, मिल गया। खिसक कर इधर चला गया था। मुझे तो पसीना आ गया।

[ठुमरी की एक कडी गुनगुनाती हुई सुजाता देवी और उनके पीछे-पीछे कल्याणी आती है।]

सुजाता (एक पक्ति गाकर) रणवीर भैया ने इतनी देर कहा लगा दी ? शहर मे क्या कर रहे हैं (पुकार कर) रामनाथ। कलाकारो को चाय और पान पहुचा देना।

अनिल शायद नीलाम नही हुआ हा।

सुजाता य कलाकार बडे बेमौक आय। खैर खैर। काई बात नही। (बठ कर ठुमरी की कडी गुनगुनाती है।)

कल्याणी (गोवधन को ताश के पत्ते देती हुई) कोई पत्ता निकाल कर देखिए।

गोवधन निकाल लिया।

कल्याणी अब पत्ते फेंट दीजिए ठीक। मुझे दीजिए। यह बात। अब श्रीमान गोवधन जी एक, दो और तीन। अपने कुरत की दाहिनी जेब देखिए।

गोवधन (जेब से पत्ता निकालता हुआ)काले का अट्ठा बिलकुल ठीक। (अचरज से) जरा साचिय तो।

कल्याणी (ताश के पत्ते फेंट कर हाथ मे रखती हुई अनिल से) जल्दी बताइये, ऊपर कौन सा पत्ता है? जल्दी, जल्दी।

अनिल अ काले की बीवी।

कल्याणी (दूसरे हाथ से ऊपर का पत्ता उठाती हुई) यह रही काले की बीवी। आज का मौसम कितना सुहाना है।

[जस धरती के भीतर से कोई औरत जवाब दे रही हो।]

आवाज जी हा, मौसम तो बडा सुहाना ह।

कल्याणी (आवाज को सबोधन करती हुई) आप कितना अच्छी हैं, मेरी हर बात का समथन करती हैं।

आवाज और आप अच्छी नही?

सुजाता वाह रे वेंट्रोलोक्स्टि। कमाल ह।

गोवधन कमाल। (अचरज से) अरे, यह तो कामरू-कामच्छा का जादू है। जरा साचिये तो।

कल्याणी आपने देखा है कामरू कामाच्छा?

अनिल एकदम बल।

कल्याणी अच्छा, यह आखिरी मेल। जरा ध्यान ध्यान दीजिए। (एक सोफे पर से चादर उठा कर) मैं यह चादर बेच रही हू, कितनी फँसी चादर है (हिलाकर) है कोई खरीदने वाला ?

गोवधन जरा सोचिये तो।

कल्याणी एक, दो, तीन। (चादर हटा लेती है। उसके पीछे काति खडी है। काति भागती हुई दूसरे कमरे मे चली जाती है।)

सुजाता बहुत अच्छा। बहुत अच्छा।

कल्याणी अच्छा, फिर एक बार। (चादर उठा कर हिलाती हुई) एक, दो, तीन। (चादर हटा लेती है। उसके पीछे उत्पला खडी है। चादर फेंककर कल्याणी हसती हुई चली जाता है।)

गोवधन (अचरज से) जरा सोचिये तो। कल्याणी दवी सुनिये यह कामरू कमच्छा का जादू यह (कल्याणी के पीछे जाता है।)

सुजाता अभी तक भैया नही आये, शहर म क्या करन लग गये ? जो होना था सो तो हो चुका होगा। या तो पूरी जायदाद बिक चुकी होगी या नीलाम नही हुआ। एक-न एक तो हुआ ही होगा।

उत्पला (सहारा देते हुये) मामा ने जरूर खरीद लिया होगा।

अनिल (ताने के स्वर मे) हा, जरूर।

उत्पला बनारस वाली नानी ने मामा को जायदाद खरीदन के लिये लिख दिया है। वह अपने नाम पर खरीद कर काति के लिए रखना चाहती हैं। मुझे ता पूरा विश्वास है कि मामा न नानी के नाम पर जायदाद खरीद ली होगी।

सुजाता हा, उन्हान पद्रह हजार भेजा कि उनके नाम जायदाद खरीदी जाए। हम लोगो पर तो विश्वास ही नही है। लेकिन उतने से क्या होगा। उससे तो सूद भी नही चुकेगा। (तलहथी मे मुह ढकती हुई।)आज मेरी तकदीर का फैसला हो गया होगा।

अनिल (उत्पला को चिढाते हुए) श्रीमती चौधरी।

उत्पला (चिढ़कर) बूढ़ा कौआ। और दो बार कालेज से निकाल क्या गय ?

सुजाता अच्छा उत्पला, मुझसे बता। इसम हज ही क्या है ? तू क्या नहीं जगन्नाथ चौधरी से शादी कर लती ? कितना अच्छा आदमी है।

उत्पला अम्मा ! आप मेरा मजाक उडाती हैं।

सुजाता अर, मैं तो कहती हू कि शादी कर ल। मैं भला तेरा मजाक

उत्पला उनको इन सब बाता के बारे मे सोचन की भी फुरसत नहीं। वह तो बस पैसा जमा करता है। मैं क्या उनके गले म झूल जाऊ ?

तिनकौडी (प्रवेश कर) गदाधर राम म तानपूरा टूट गया। (हसता हुआ जाता है।)

उत्पला लेकिन वह वहा क्या कर रह थ। उनको तानपूरा दन के लिए किसन कहा ?

[तमतमाती हुई उत्पला हाल की ओर जाती है।]

सुजाता अनिल उत्पला को इस तरह न चिढाया करो। उसे बात लगती है।

अनिल अरे सुजाता देवी, उस काम धधे मे फुरसत कहा। काम धधा और फिर सब के मामले म दखल दना। देखिय तमाशा। छुट्टी भर वह वह कांति और मेरे पीछे हर क्षण लगी रहती है। उसे डर है कि कहीं हम लोग प्रेम न करन लगें। लेकिन क्या मैं इसी तरह का आदमी दीखता हू। इस तरह की बाता मे, प्रेम स मैं बहुत ऊपर उठ चुका हू।

सुजाता (बडी बचनी से) भया अब तक लौटे क्या नहीं ? मैं सिर जानना चाहती हू कि क्या हुआ बिकी या बची। हे भगवान

इतना बडा सकट कि यह भी नही सूझता कि क्या करू क्या सोचू। सच्ची बात कहती हू, मुझे लगता है कि मैं किसी भी क्षण चीखने चिल्लाने लग जाऊगी। अनिल मेरी सहायता करो कुछ बातें करो। इस तरह चुप मत रहो।

अनिल क्या फर्क हो जायगा यदि जायदाद आज बिके या कल? यह सारा किस्सा तो कब का खत्म हो चुका। पुल जल गया उस पार लौट कर नही जा सकती। आपको ऐसे समय म धैर्य से काम लेना चाहिये। अपने को धोखा देकर क्या होगा। भगवान के लिए एक बार तो सत्य को देखने की, पहचानने की कोशिश कीजिये।

सुजाता कैसा सत्य? तुम देख सकते हो कि सत्य क्या है कहा है। लेकिन मेरी दृष्टि खोई है, मुझे कुछ नही सूझता। तुम अपने सारे मसले दृढता से सुलझा लेते हो, लेकिन सच-सच कहना क्या इसलिए नही कि तुम अभी जवान हो, तुमने अभी गर्दिश के उतने दिन नही देखे जितने हम लोगो ने देखे हैं। तुम भविष्य की ओर साहस और आशा के साथ देखते हो क्या इसलिए कि जीवन अभी भी तुम्हारी जवान आखो मे नही समा सका है, तुम भविष्य की भयानकता की कल्पना भी नही कर सकते। हम लोगो की अपेक्षा तुम अधिक साहसी ईमानदार और गभीर दिखाई पडते हो, लेकिन जरा हम लोगो की हालत सोचो, ठडे दिल से सोचो। और हो सके तो हम लोगो को माफ कर दो। मैं यही पैदा हुई मेरे मा-बाप, दादा-दादी इसी मकान म रहते थे। इस मकान, इस बगीचे के बिना मै जीने की कल्पना भी नही कर सकती। इसे बिकना ही है तो मुझे भी इसके साथ बिक जाने दो—(**सोफे की पीठ पर सर रखकर मौन रुदन करती हुई**) मेरा रोहित यही डूबा। (**सिसकती हुई**) मुझ पर रहम करो अनिल, रहम।

अनिल आप तो जानती ही हैं कि मेरे हृदय म कितनी गहरी सहानुभूति है।

सुजाता तो इस तरह क्या बात करते हो (ब्लाउज के भीतर से रुमाल निकालती है। एक तार फर्श पर गिर पड़ता है।) आह आज मेरे सीने पर कितना बडा बोझ लदा है, तुम कल्पना भी नही कर सकते। यहा इतना शोरगुल है, हर आवाज पर जैसे मेरा कलेजा काप उठता है। मेरा रोआ-रोआ सिहर उठता है। फिर भी डर के मारे मैं अपने कमरे मे नही जा सकती। वहा एसा सन्नाटा है, इतना अकेलापन है नही मुझे दोष मत दो अनिल मैं तुम्हे लडके की ही तरह प्यार करती हू। क्राति स मैं स्वय तुम्हारी शादी कर दूगी। लेकिन तुम अपनी पढाई खतम करो। पहले इसे खतम कर लेना जरूरी है। अभी तो तुम कुछ नही करते। लगता है। कि तकदीर तुम्हे डगर पर के बगन की तरह इधर से उधर लुढकाया करती है ! है कि नही? बोलो, है कि नही? और एक बात। जरा अपनी दाढी तो रोज बना लिया करो। तुम भी अजीब लडके हो। (हसती है।)

अनिल (तार उठा कर देते हुए) छला बन कर क्या होगा।

सुजाता यह तार बम्बई से आया है। रोज एक तार आता है। कल भी आया था और आज भी हजरत फिर बीमार पडे हैं। तबाह हो रहे हैं चाहते हैं कि मैं लौट आऊ। बेचारा माफी मागता है, गिडगिडाता है और मुझे भी लगता है कि बीमारी की हालत मे म पास होती तो अच्छा होता। तुम्हारी आखें फिर चढ गयी। अच्छा बताओ कि मैं क्या करू। वह बीमार है अकेला है बेहाल है। वहा उसकी देख रेख करने वाला कौन है कौन है जो उसे समय पर दवा खिलायेगा या इधर-

उधर हरारत नही करने देगा। और फिर छिपा कर ही क्या होगा? मैं उसे प्यार करती हू, हजार बार प्यार करती हू। मैं जानती हू कि वह मेरे गले का पत्थर बन गया है, मुझे ले डूबेगा फिर भी मैं उस प्यार करती हू और उसके बिना रह नही सकती। (**अनिल की ओर देखते हुए**) अनिल, मेरे बारे म तुम बुरा नही सोचते हो न? अनिल चुप रहो! दोनो मत।

अनिल (**भावावश को रोकता हुआ**) मुझे माफ कीजिये पर साफ-साफ कहना ही पडता है—वह आपको ठग रहा है।

सुजाता (**कानों पर हाथ रखती हुई**) नही नही, नही, इस तरह मत कहो अनिल।

अनिल सारी दुनिया समझती है कि वह क्या है। सिर्फ आप नही समझती या समझना नही चाहती!

सुजाता (**सयत क्रोध से**) तुम्हारी उम्र छब्बीस-सत्ताईस वर्ष की हो गई फिर भी प्राइमरी स्कूल के लडके ही मालूम होते हो।

अनिल मेरी फिक्र छोडिये।

सुजाता इस उम्र म तुम्हे आदमी बन जाना चाहिये। जो लोग प्रेम करते हैं उन्हे समझने की बुद्धि होनी चाहिये। और सच्ची बात तो यह है कि तुम्हे स्वय प्रेम करना चाहिए या शादी कर लेनी चाहिए। (**गुस्से मे**) हा, म ठीक कहती हू। और तुम्हारा पवित्रता का, सच्चाई का यह दावा? बिल्कुल ढोंग है, तुम्हारे दिमाग का भूत है। तुम एक नासमझ

अनिल (**घबरा कर**) आप क्या कह रही हैं?

सुजाता म प्रेम से ऊपर हू। बिल्कुल झूठ। सरासर झूठ।

अनिल (**परेशानी मे**) आप क्या कह रही हैं? ओह! मैं जा रहा हू। (**जाता है पर उसी क्षण लौटता है और बाहर के दरवाजे से जाते हुए**) आज से हमारा और आपका कोई सबध नही रहा। (**प्रस्थान**)

सुजाता (पुकारते हुए) अनिल। सुनो तो। अरे म मजाक कर रही थी।

[नेपथ्य से किसी के दौडने की और फिर धमाके के साथ गिरने की आवाज आती है। काति और उत्पला पहले तो चीख उठती हैं पर पीछे ठठा कर हस दती हैं। *दौडती हुई काति आती है और हसती हुई कहती है।*]

काति अनिल जी मुह के बल गिर पडे। (हसती हुई दूसरी ओर चली जाती है।)

सुजाता अजीब लडका है।

[उत्पला अनिल जी को पकड कर लाती है।]

सुजाता अनिल, मुझे माफ कर दो। मुझसे भूल हो गयी। चलो, हम लोग गाना सुनन चले।

[उत्पला सुजाता और अनिल जाते हैं। दूसरी ओर से तिनकौडी और रामनाथ प्रवश करत हैं।]

तिनकौडी क्यो नाना क्या हाल हैं ?

रामनाथ मेरी तबीयत ठीक नहीं पहले जब गाना बजाना होता था तो कितन बड-बड उस्ताद आत थ कसी भीड होती थी। और अब ? हू। पता नहीं क्या मैं इतना कमजोर हो गया हू। पुरान मालकि यानी मालकिन के दादा हर बीमारी के लिए एक पुडिया बाटा करते थे, त्रिफला की। बीस पच्चीस वर्षों से रोज एक पुडिया खा रहा हू। शायद इसी-लिए जिन्दा हू।

तिनकौडी नाना, तुम सचमुच थका डालत हो। (जम्हाई लेकर) अब

तुमको इस दुनिया से कूच करना चाहिए नाना।

[सुजाता देवी और अनिल गाने बजाने के कमरे से आते है।]

सुजाता अभी देर मालूम पडती है। तब तक मैं यही बैठूगी।

कांति (प्रवेश कर) बावर्चीखाने में कोई कह रहा था कि यह जायदाद नीलाम हो गयी।

सुजाता नीलाम हो गयी? किसने खरीदा?

कांति पता नही, वह तो चला गया। (अनिल का हाथ पकड कर ले जाती है।)

तिनकौडी पता नही गाव के ही दो एक आदमी जान पडते थे।

रामनाथ और मालिक अब तक नही लौटे हैं। इतनी रात हो गयी, भला एक डब्बा पान कब तक चलेगा। खतम हो ही गया होगा।

सुजाता तिनकौडी, पता लगाओ तो किसने खरीदा।

तिनकौडी वह आदमी तो चला गया। (दांत निपोरता है।)

सुजाता (खीझ कर) तो दात क्यो निपोरते हो? तुम्हे बडी खुशी मालूम होती है।

तिनकौडी जी नही, वह गदाधर राम है न

सुजाता रामनाथ, यदि जायदाद बिक गयी तो तुम कहा जाओगे?

रामनाथ जहा आप कहेगी।

सुजाता आज तुम ऐसे क्या दिखायी पडते हो? तबीयत ठीक नही? जाओ, जाकर आराम करो।

रामनाथ जी हा (फीकी हसी हसकर) मैं आराम करने चला जाऊगा तो इतने लोगो को कौन देखेगा। मेरे सिवा और कौन है।

तिनकौडी मालकिन, आप से एक बात कहनी है। आप यदि फिर बम्बई जायेंगी तो कृपा कर मुझे भी साथ ले चलेंगी। यहा तो मेरा

गुजारा मुश्किल मालूम हाता है। (इधर उधर देखकर जरा दवी आवाज मे) अव म आप से क्या कहू आप ता खुद देख रही है। लोग सब जाहिल और जरा उस तरह के हैं। फिर मेरा मन भी नही लगता। और हम लोगा का जो खाना दिया जाता है सा क्या आप से छिपा है। ऊपर से है रामनाथ ! जाने क्या-क्या उल्टी सीधी वात रात दिन बुद-बुदाता रहता है। मुझे अपने साथ ले चलिए।

गोवधन सुजाता देवी, चलिए न गाना सुनन। और देखिये, यह एक सौ अस्सी रुपया आपको देना ही पडेगा। जी हा, बस एक सौ अस्सी।

[गोवधन और सुजाता गाने बजाने वाले कमरे म जाते ह।]

तिनकौडी (गाता है) हा कौन बुझाए राम तपत मारे मन की

सोनिया (प्रवेश कर) छोटी मालकिन न मुझसे कहा—सोनिया जाकर कलाकारो को पान और चाय द आ। अव भला मैं क्या करती। मेरा ता कलेजा धक धक करने लगा। जानते हो नाना उस तवले वाले ने क्या कहा ?

रामनाथ क्या कहा ?

सोनिया उसने कहा, मुझसे नही साथी को इशारा कर —गुलाब की कली।

तिनकौडी हाय रे मूरख। (जम्हाई लेता हुआ जाता है।)

सोनिया गुलाब की कली   सचमुच म बहुत नाजुक हो गयी हू और जब लोग ऐसी बात करते है तो मेरा जी कैसे-कैसे करने लगता है !

रामनाथ घबरा नहीं तेरा दिमाग ठीक हो जायगा।

[गदाधर राम प्रवेश करता है।]

गदाधर सोनिया, मानो देवी जरा इधर भी तो देखो। ऐसा लगता है

जैमे मैं कोई कीडा फतिगा हू। (गरम सास लेता हुआ) हायरे जिन्दगी।

सोनिया कहिए क्या है?

गदाधर शायद तुम ही सही हो और मै गलत। (गरम सास लेता हुआ) लेकिन जरा इस तरह तो सोचो, और साफ-साफ कहने के लिए माफ करना, तुमने ही मेरी यह हालत की है मै जानता हू कि मेरी तकदीर मे क्या लिखा है। रोज मेरे साथ एक न एक अप्रिय घटना घटती है। म तो इसका इतना आदी हो गया हू, कभी-कभी हस भी देता हू

सोनिया अच्छा, पीछे कहना। अभी मुझे मत छेडो, म सपना की दुनिया मे हू गुलाब की कली, नाजुक।

गदाधर म जानता हू कि मेरे साथ हर रोज एक न एक अप्रिय

[उत्पला गान वजान के कमरे से प्रवेश करती है।]

उत्पला गदाधर राम, अभी तक तुम घर नही गये। तुम्हे कोई तौर-तरीका नहीं आता। सचमुच (सोनिया से) तू यहा क्या कर रही है? (सोनिया जाती है) एक तो बिना पूछे तानपूरा इधर-उधर करने लगे, फिर गिरा कर उसे तोड दिया। और अब यहा चक्कर लगा रहे हो।

गदाधर तो, आप इस तरह मुझ पर दोष मढगी?

उत्पला दोष नही मढती, मै सिर्फ कह रही हू। दिन भर तो कुछ काम धधा करते नही, सिर्फ इधर से उधर चक्कर लगाते रहते हो। पता नही इस घर मे पटवारी की क्या जरूरत है?

गदाधर देखिये म टहलता हू या काम करता हू खाता हू या तान पूरा तोडता हू, इसके बारे मे आपसे म कुछ नही कहना चाहता। जो मुझसे बडे हैं वे कह तो एक बात है।

उत्पला क्या कहा? (गुस्से में) क्या कहा कि मुझसे सुनना नही

चाहत ? चलो, निकलो यहा से, अभी निकलो।

गदाधर (सम्हलते हुए) देखिए, उत्पला देवी

उत्पला निकलो यहा स अभी। मै इस घर म तुम्हारी सूरत देखना नही चाहती। अभी, निकल जाओ।

[गदाधर भागता हुआ दरवाजे तक जाता है और उत्पला उसके पीछे पीछे जातीहै। गदाधर जाता है। नपथ्य से उसकी आवाज सुनाई देती है—म मालकिन से सारी बात कहूगा।]

फिर इधर आये। अच्छा आओ। (**कोने मे पडी छडी उठाती हुई**) आओ तो बताती हू। आओ और देखो तमाशा, होश ठिकान कर दूगी।

[छडी घुमाती है उसी समय जगन्नाथ चौधरी प्रवश करता है। छडी उस नही लगती है। पर उत्पला सहम जाती है।]

जगन्नाथ धन्यवाद।

उत्पला माफ कीजिए।

जगन्नाथ नही, कोई बात नही। कम स कम अचरज तो हुआ, उसी के लिए धन्यवाद।

उत्पला नही, धन्यवाद की कोई जरूरत नही। आपको चोट तो नही लगी ?

जगन्नाथ नही। छडी तो नही छू सकी पर जान घाव कितना गहरा लगा है।

नेपथ्य से एक स्वर—जगन्नाथ चौधरी आ गया।

नपथ्य से दूसरा स्वर—हा, जगन्नाथ चौधरी ही तो है।

गोवधन (प्रवेश कर) अरे जगन्नाथ चौधरी। इतनी दर कहा लगा

दी ? और भैया कहा है ? पान खाये हैं (मुह सू घता है ।) किमाम भी खाया है हम लोग भी यहा बनारसी जर्दा खा रहे हैं।

सुजाता (प्रवेश कर) जगन्नाथ चौधरी । इतनी देर कहा लगा दी ? और भया कहा है ?

जगन्नाथ वह मेरे साथ ही लौटे है, आ रहे हैं।

सुजाता (बेचैनी से) हुआ क्या ? नीलाम हुआ ? बोलो न।

जगन्नाथ (हर्षातिरेक को रोकने की कोशिश करता हुआ) नीलाम तो चार ही बजे खत्म हो गया। मोटर खराब हो गयी इसीलिए गाडी से आना पडा। (गहरी सास लेकर) अब, मेरा सर चक्कर खा रहा है।

[रणवीर प्रवेश करता है। उसके दाहिने हाथ म कुछ सामान है और बायें हाथ से वह आसू पोछ रहा है।]

सुजाता भया, क्या हुआ ? (रोनी आवाज मे) कुछ बोलो तो।

रणवीर (जवाब नहीं देता बल्कि सामान रामनाथको देता है) इसमे खाने की चीजें ह और पान का मसाला पाच घण्ट हो गए पान खाए ओह मेरी क्या दुर्गति हुई है। (अपनी रोनी आवाज को सम्हाल कर) मैं बहुत थक गया हू, जरा कपडे बदल लू।

[रणवीर के पीछे-पीछे बुदबुदाता हुआ रामनाथ भी जाता है।]

गोवधन क्या हुआ, क्या ? नीलाम का पूरा किस्सा कहो।

सुजाता क्या जायदाद बिक गयी ?

जगन्नाथ हा।

सुजाता किसने खरीदा ?

जगन्नाथ मैंने।

[क्षण भर के लिए गहरा सन्नाटा छा जाता है। सुजाता बड़ी मुश्किल स टेबुल के सहारे अपने को सम्हाल पाती है और कुर्सी पर धम से बठ जाती है। उत्पला आचल से चाभियो का गुच्छा खोल बीच पश पर पटक तेजी से एक ओर चली जाती है।]

हा, मैंन खरीदा। एक मिनट, आप लोग एक मिनट ठहरिए। शायद मेरा दिमाग ठीक तरह से काम नही करता, मैं कुछ *समझ नही पाता (हसता है) जब हम लोग नीलाम की* जगह पहुचे तो रामटहल चौधरी पहले से मौजूद। रणवीर बाबू के पास तो पन्द्रह हजार थे पर बेचारे क्या करत। पहली ही बोली रामटहल चौधरी न कहा तीस हजार। सारी बात समझते मुझे देर नही लगी। मैं भी मैदान म आ गया। मैंने कहा चालीस हजार। उसन कहा पतालीस मैंने कहा पचपन। वह पाच हजार बढाता तो मैं दस हजार। आखिर नब्बे हजार मे मैंने खरीद लिया। जी हा मैंने खरीद लिया। (हसता है।) अब यह जायदाद यह दो कोस का बगीचा मेरा है। कहिए कि मैंन शराब पी है कहिए कि मरा दिमाग खराब हो गया है, कहिए कि मै सपने,म बक रहा हू (पर पटक कर) हसिए मत। काश कि मरे बाप दादा देख पाते कि यह क्या हो गया। उनका वह जगना, वह अपढ जगना जिसे वे छडी से पीटते थे और जो नगे पाव गाव मे मारा-मारा फिरता था आज इस जायदाद का मालिक है। हा, मैंन वही जायदाद खरीदी है जहा मर बाप-दादे बेगारी और मजूरी किया करत थे। ओ, शायद मैं सपन तो नहा देख रहा हू? मेरा दिमाग अजीब-अजीब बातें सोचन लगा है

(चाभियो का गुच्छा उठाते हुए) फेंक गयी क्योंकि अब वह इस घर की मालकिन नही। (झनकाते हुए) खैर कोई बात नही। (साज मिलाने की आवाज आती है।) अच्छा! कलाकारो, एक फडकती हुए चीज सुनाइए। मुझे ऐसी ही चीज चाहिए। और हा, जब जगन्नाथ चौधरी कुल्हाडी लेकर निकलेगा तो देखिएगा कि किस तरह से पेड अररा कर गिरते है। मैं यहा सैंकडो मकान बनवाऊगा और हमारे बच्चे, उनके बच्चे देखेंगे कि नयी जिन्दगी यहा किस तरह पनपती है, मुसकराती है। चलिए कुछ गाना बजाना हो जाय।

[साजो का मिलाना जारी है। सुजाता देवी कुर्सी मे धसकर बुरी तरह रो रही हैं।]

आपने पहले मेरी बात क्यो नही मानी? सुजाता देवी, अब भला क्या हो सकता है। (बडी भावुकता से) ओह, काश कि हम लोग अपनी यह शर्मनाक जिन्दगी बदल पाते।

गोवधन (बाह पकड कर धीमे स्वर मे) वह रो रही है। चलो, हम लोग उस कमरे मे चले।

जगन्नाथ खैर, कोई बात नही। हा कलाकारो, कुछ हो। अब से जैसा मैं कहूगा वैसा ही होगा। (ताने मे) यह, इस जायदाद का अब यह मालिक है। (एक टेबुल से टकरा जाता है। टेबुल से कई शीशे के बर्तन गिरकर टूट जाते हैं।) कोई बात नही। मैं सबकी कीमत चुका सकता हू।

[नेपथ्य से गाने का स्वर सुनाई पडता है। गोवधन के साथ जगन्नाथ जाता है। दरवाजा खटाक् शब्द के साथ बन्द होता है। गाने की आवाज धीमी पड जाती

है। कुर्सी म धसी सिसक सिसक कर रोती हुई सुजाता के कमरे म कोई नही। कान्ति और अनिल प्रवेश करते हैं।अनिल दरवाजे के पास खडा रहता है और कान्ति सुजाता के पास घुटन टेक कर बठ जाती है।]

कान्ति अम्मा, अम्मा, तुम रोती हो ? अम्मा, यह जायदाद, यह आम का बगीचा बिक गया लेकिन अभी तो तुम्हारी आत्मा के सामने पूरा भविष्य है। आओ, मरे साथ आओ। यहा से दूर ही हा जाना अच्छा है। हम लोग एक नया बगीचा लगायेंगे अम्मा,ऐसा बगीचा जो इससे कई हजार गुना अच्छा होगा। जब तुम उसे दखागी तो तुम्हारे हृदय म आशा की नई लहर छा जाएगी, तुम फिर मुस्कराने लगागी। आओ, मरे साथ आओ

[परदा गिरता है]

चौथा अक

[पहले अक वाला कमरा। कमर की दीवारा पर तस्वीर नहीं खिडकियो और दरवाजा से पर्दे भी हटा दिए गए है। कमरे की सारी बची-खुची चीजे एक ओर रख दी गई हैं। मच के पिछले हिस्से म दरवाजे के पास कई सूटकेस और बक्स इत्यादि जमा हैं। बायी आर क दरवाजे से, जो खुला है, उत्पला और कांति का स्वर सुनाई पडना है। कमर के बीचाबीच जगन्नाथ चौधरी खडा है। दूसरे खुले दरवाजे से दिखाई पडता है कि गदाधर बिस्तर बाध रहा है। कुछ दूर से किसानो की भीड का स्वर सुनाई पडता है। रण वीर का स्वर सुनाई पडता है—आप लोगो को बहुत-बहुत धन्यवाद।]

तिनकौडी किसान विदा करन आए हैं। चौधरी जी, मैं तो समझता हू कि ये किसान बडे ही नेक है पर जरा बेवकूफ लगते हैं।

[लोगा का शोरगुल कम हो जाता है और सुजाता रणवीर के साथ प्रवेश करती है। सुजाता रो रही है पर उसका चेहरा पीला और बीमार सा लगता है। उसके मुह से बात नही निकलती।]

रणवीर तुमने अपने बटुए का सब कुछ उन लोगा को दे दिया। ठीक नही किया, सचमुच।

[दोनो का प्रस्थान]

जगन्नाथ (उनके पीछे पीछे दरवाजे तक जाते हुए) कुछ मिठाई तो खा लीजिए। सचमुच अच्छी मिठाई है शुद्ध घी की बनी हुई। शहर से तो ला नही सका यही स्टेशन पर खरीदा। दो एक तो खा ही लीजिए। (कुछ रुककर) आप लोग एक भी नही खाइएगा ? (दरवाजे से वापस लौटते हुए) मालूम होता तो खरीदता नही। खर ! तिनकौडी तुम एक प्लेट खा लो।

[तिनकौडी तश्तरी को सम्हालकर एक कुर्सी पर रखकर एक प्लेट उठा लेता है और मिठाई खाता है।]

तिनकौडी हा, असली घी की बनी है। आप ठीक कहते है।

जगन्नाथ अभी तक गर्मी पड रही है। अक्तूबर का महीना और यह मौसम।

तिनकौडी पखा सब खुल गया है न। खर कोई बात नही। हम लोग तो जा ही रहे है।

(हसता है।)

जगन्नाथ हसते क्यो हो ?

तिनकौडी क्योकि मै बहुत खुश हू।

जगन्नाथ अक्तूबर का महीना और यह मौसम। खर मकान बनवाने के लिए बडा अच्छा मौसम है (घडी देखकर पुकारते हुए) सुजाता देवी, रणवीर बाबू गाडी आने म कम पौन घण्टे की देर है। यानी बीस मिनट म चल देना होगा।

[अनिल का प्रवेश करते है। उन्होने धोती पहन ली है। पैरो म चप्पल है।]

अनिल मैं समझता हू कि अब हम लोगो को रवाना होना चाहिए। गाडी तो आ गयी है। (इधर उधर ढूढता हुआ) हे भगवान मेरा जूता कहा गायब हो गया। (पुकारते हुए) कान्ति

मेरा जूता यहा भी नही ह । मैं तो खोजते-खोजते थक गया
हू ।

जगन्नाथ मुझे भी पटना जाना ह । आप लोगो के ही साथ मैं भी उसी गाडी से जाऊगा । कुछ दिन वहा रहने का इरादा है । बहुत दिनो से मै यहा पडा हू । लेकिन बिना काम के मुझसे बैठे रहना असभव है । देखिए न मेरे हाथ कसे हो गए है, मानो मेरे हैं ही नही ।

अनिल हम लोग तो जा रहे हैं । उसके बाद आप अपना काम शुरू कर दीजिएगा ।

जगन्नाथ थोडी मिठाई खाइए ।

अनिल नहीं, इच्छा नही है । धन्यवाद ।

जगन्नाथ तो आप भी पटना जा रहे है ?

अनिल नही इन लोगो को रवाना कर मैं कल जाऊगा ।

जगन्नाथ खैर, खर शायद प्रोफेसर लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे होगे, लेक्चर बन्द होगा ।

अनिल तो आपको मतलब ?

जगन्नाथ अच्छा, यह बताइए कि कितन वर्ष हो गये आपका पढने ?

अनिल भाई, कुछ नयी बात हो तो कहो । यह बात तो पुरानी हो गई । (जूता खोजते हुए ।) खर, एक बात । शायद फिर हम लोगो की मुलाकात हो या नही, तुम इस तरह हाथ फैला कर बात करना बन्द करो, यह बडा भद्दा लगता है । और यह मकान बनवाने की बात रुपये पसा का हिसाब, यह सब भी अभी बन्द करो । आखिर इन सबके बावजूद तुम मुझे अच्छे भी बुरे नही लगते । तुम्हारा नाक नक्शा, तुम्हारी नाजुक उगलिया सब कुछ कलाकार की तरह लगती है । कम से कम तुम्हारी आत्मा शुद्ध और पवित्र है ।

जगन्नाथ (गले लगाते हुए) मेरे अच्छे दोस्त अच्छा अलविदा । जो

कुछ हुआ उसे भूल जाना। और तुम्हे कुछ रुपया की जरूरत हो तो मैं द सकता हू।

अनिल रुपया ? नही मुझे रुपया नही चाहिए।

जगन्नाथ लेकिन तुम्हे किराया इत्यादि तो चाहिए ? उसके लिए तो पैसा चाहिए।

अनिल एक अनुवाद के लिए मुझे कुछ पसे मिल गए है। (जेब दिखाते हुए) धयवाद। अभी मेरे पास पसा है। लेकिन कम्बख्त जूता कहा गया, समझ म नही आता।

उत्पला (दूसरे कमरे से) सम्भालो अपनी चीज। (एक जोडा फटा पुरा जूता फेंक देती है।)

अनिल तो इतना गुस्सा क्या करती हो। हू लेकिन यह तो मेरा जूता नही है।

जगन्नाथ मैंने दो हजार बीघे म सरसा बाया था और जानत हो, चालीस हजार मुनाफा हुआ। जब सरसो फूला तो, ओह। कसा सुहाना दृश्य था। यानी मुझे चालीस हजार मिल गए हैं और मैं इस समय तुम्हे कुछ रुपया दे सकता हू। उस तरह क्यो दखते हो। अरे भाई मैं आखिर तो गाव का किसान ठहरा। मेरे तौर तरीके का ख्याल मत करो।

अनिल तुम्हारा बाप किसान था, मेरा बाप दूकानदार। लकिन इससे कुछ बनता बिगडता है क्या ?

[जगन्नाथ जेब से बटुआ निकलता है।]

रहने दो, रहने दो मुझे दो हजार भी दो तो मैं नही छू सकता। मैं उन्मुक्त जीव हू ! यह रुपया पसा जिसे तुम लखपति और भिखारी दोना दात से पकडते हो, जिसके लिए तुम लोग जीत मरते हो मेरे लिए कुछ नही। मेरे लिए ये हवा म उडते हुए तिनके हैं। मुझमे शक्ति है, मुझम अभिमान हैं, मैं इनके बिना भी जी सकता हू। इसानियत का

कारवा उस सम्पूर्ण सत्य की ओर उस आनन्द की ओर बढ रहा है जो इस धरती पर सभव है और मैं भी उस कारवें म शामिल हू।

जगन्नाथ वहा तक पहुच भी सकोगे ?

अनिल जरूर। (कुछ रुक कर) या तो मैं पहुचूगा या वहा तक पहुचने का रास्ता दूसरो को दिखा जाऊगा।

[नेपथ्य म आम के पेड काटन का शब्द सुनाई पडता है।]

जगन्नाथ अच्छा, मेरे अच्छे दोस्त। अलविदा। जाने का समय हो गया। यहा हम लोग बैठकर अपन मुह मिया मिट्ठू बन रह हैं और उधर समय बीतता जा रहा है।जब मैं बिना आराम किए घटो लगातार काम करता रहता हू तो मुझे बडा अच्छा लगता है। मुझे लगता है कि जीवन का रहस्य मैंने जान लियालेकिन हमारे देश म लाखो लोग ऐसे हैं जिन्हें यह भी पता नही कि वे क्यो जीवित हैं। खैर, कोई बात नहीं। छोडो इस झमेले को। सुना कि रणवीर बाबू बैंक म पाच सौ रुपये की नौकरी करने जा रहे है। मै कह देता हू उनसे नौकरी चाकरी नहीं होगी। वह बडे काहिल है

काति (दरवाजे पर से) अम्मा कहती है कि हम लोगा के जान के बाद ये पेड कटें तो अच्छा है।

अनिल हा, मैं भी यही कहता हू। कम-से-कम *(इशारा करता है)*

जगन्नाथ अच्छा, अच्छा।

[पहले अनिल जाता है और उसके पीछे-पीछे जगन्नाथ।]

काति रामनाथ अस्पताल गया ?

तिनकौडी मैंने तो सुबह ही कह दिया था। हा, वह चला गया। (दूसरे कमरे मे जाते हुए गदाधर से) गदाधर राम जरा

देखो तो कि रामनाथ अस्पताल गया या नही।

तिनकौडी मैंन ता कहा न।

गदाधर (प्रवेश कर)यह रामनाथ। ओह उसे अब मर जाना चाहिए, उनका कोई इलाज नही। मुझे ता उससे ईर्ष्या होती है। (लोहे का एक बक्स चमडे के सूटकेस पर रख देता है और उसे पिचका देता है।) देखा न मर साथ कुछ-न कुछ (प्रस्थान)

तिनकौडी बेचारा। अभागा।।

उत्पला (नेपथ्य से) रामनाथ अस्पताल गया?

काति हा।

उत्पला (नेपथ्य से) तो डाक्टर के नाम चिट्ठी क्यो नही लेता गया? चिट्ठी यही पडी है।

काति मैं किसी की माफत भिजवा दूगी। (प्रस्थान।)

उत्पला (नेपथ्य से) तिनकौडी कहा है? उसकी मा मिलन के लिए आयी है।

उत्पला आह, बुढिया अब मरा सर खा जाएगी।

[जिस समय से सब बात हो रही हैं सोनिया झूठमूठ सामान के साथ खेल रही है। तिनकौडी को अकेला पाकर अब उसके पास आती है।]

सोनिया एक बार मेरी तरफ भी तो देखो तिनकौडी। तुम जा रहे हो मुझे अकेली छोडकर। (आसू पोछती है।)

तिनकौडी तो इसम रोने की क्या बात है? (मिठाई खाता है।) तीन दिना म बम्बई पहुच जाऊगा। कल मेल पर सवार होऊगा और बस सीधा बम्बई। यहा से गायब। मुझे तो विश्वास नही होता। हाय रे बम्बई। यह जगह मुझे अच्छी नही लगती। मैं यहा रह नही सकता। सब कुछ जस सोया हुआ लगता है।

और लोग कितने जाहिल हैं और बहुत हो चुका। (मिठाई का एक टुकड़ा उठा कर खाता है।) रोती क्यों हो? भली लड़कियों की तरह रहो और रोने की कभी नौबत नहीं आएगी।

सोनिया (अपने को सम्हालते हुए) बम्बई से चिट्ठी लिखोगे न? तुम तो जानते हो कि मैं तुमको कितना प्यार करती हूं। तिनकौड़ी मेरे पास भी दिल है।

तिनकौड़ी कोई आ रहा है। (सामान सहेजने लगता है।)

[सुजाता, रणवीर, कान्ति और कल्याणी का प्रवेश।]

रणवीर अब हम लोगों को चलना चाहिए। बहुत समय नहीं है। (तिनकौड़ी को देख कर) ओह यह लहसुन की गंध।

सुजाता हां दस मिनट में हम लोगों को रवाना हो जाना चाहिए? (कमरे को देखकर) प्यारे घर अलविदा। जाड़ा बीतेगा और वसन्त आयेगा पर तुम नहीं रहोगे। ओह, इन दीवारों ने कितना देखा है। (कान्ति को चूमती हुई) क्या बात है बेटी? तुम्हारी आंखें हीरे की तरह चमक रही हैं। तुम बहुत खुश नजर आती हो?

कान्ति हां अम्मा। हम लोगों की नयी जिन्दगी अब शुरू हो रही है।

रणवीर ठीक कहती है। धीरे धीरे अब सब ठीक हो गया। जायदाद बिकने के पहले सब कोई हैरान परेशान था लेकिन उसके बाद धीरे धीरे सारी बात खतम हो गयी। बल्कि अब तो खुश भी है। और सही बात तो यह है कि अब मैं बैंक का मैनेजर हूं वह घोड़े का शाह और तुम भी सुजाता, अब एकदम ठीक हो गयी हो सचमुच।

सुजाता हां, अब मैं पहले से ठीक हूं। अब नींद भी अच्छी तरह आती है। तिनकौड़ी, मेरा सामान गाड़ी में रखो। (कान्ति से)

बेटी, जल्दी ही हम लोग फिर मिलेंगे। बनारस वाली काकी ने जो रुपया भेजा है उसी के सहारे जितने दिन बम्बई में रह सकूँ। और फिर वे रुपये कितने दिन तक चलेंगे।

कांति हाँ अम्मा, जल्दी चले आना। आओगी न। तब तक मैं इम्तहान पास कर जाऊँगी और कोई नौकरी पकड़ लूँगी और तुम्हारी मदद करूँगी। हम साथ बैठकर तरह तरह की किताबें पढ़ेंगी है कि नहीं। जाड़े की लंबी रात और गर्मी की अलस दुपहरिया में दुनिया भर की किताबें पढ़ेंगी। और तब हम लोगों के सामने एक नयी दुनिया होगी सुन्दर, निराली। जल्दी आना अम्मा।

सुजाता हाँ बेटी। मैं जल्दी ही आऊँगी।

[जगन्नाथ का प्रवेश। कल्याणी कोई गाना गुनगुना रही है।]

कल्याणी (एक गठरी उठा लेती है जिसका आकार छोटे बच्चे का है। उसे गोद में लेकर ले जाते हुए) अच्छा बबुआ हम लोग चलें। अरे रे रे। चुप चुप (एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज सुनाई देती है) मत रोओ। मत रोओ। अरे मेरा सोना च च च (गठरी को जमीन पटक देती है।) आप मेरे लिए एक नौकरी ढूँढ दीजियेगा न बिना काम के मैं कैसे जिन्दा रहूँगी।

जगन्नाथ काम का इंतजाम हो जाएगा।

रणवीर हम सभी लोगों की जरूरत ही नहीं रह गयी।

कल्याणी मैं कहाँ जाऊँगी? मेरा तो कोई नहीं है।

[बदहवास गोवर्धन राम का प्रवेश]

जगन्नाथ हैं हैं हैं हैं।

गोवर्धन (जोरों से साँस लेते हुए) ओह जरा साँस लेने दीजिये मेरा तो दम अटका जा रहा है एक ग्लास पानी

रणवीर फिर रुपया मागन आय हो। मैं नही ठहर सकता। म चला।
(प्रस्थान)

गोवधन सुजाता दवी वहुत दिनो स मैं नही मिल सका था आप लोगो से अरे, जगन्नाथ चौधरी तुम बहुत होशियार आदमी हो अच्छा हुआ, तुमसे भेंट हो गयी। लो (रुपया देता है।) गिन लो—चार सौ है और आठ सौ रहा।

जगन्नाथ (भौंचक होकर) म सपना तो नही देख रहा हू। तुमको इतन रुपये मिले कहा ?

गोवधन ठहरो, जरा दम लेन दो। मेरी ससुराल वाली वह जायदाद थी न। गले का बाझ थी पर उसमे कोयले की खान निकल आयी। एक अग्रेज ने पता लगाया—(सुजाता से) सुजाता दवी यह चार सौ आप रख लीजिय। बाकी पीछे दे दूगा। (पानी पीता है।) गाडी मे एक आदमी कह रहा था कि क्या तो नाम है उस दाशनिक का याद नही पडता वह कहता है कि छत पर से कूद जाओ और सब मसला हल। न थोडा और पानी पीना पडेगा।

जगन्नाथ यह कौन अग्रेज था ?

गोवधन अ अब मुझे आज्ञा दीजिये मुझे हरिकिशन चौधरी और तोता भगत के पास भी जाना है। उसका रुपया भी चुकाना है। कज का रुपया जितनी जल्दी हो चुका देना ठीक है। है न ? (पानी पीकर) मैं फिर शुक्रवार को आऊगा।

सुजाता हम लोग अभी तुरत जा रहे है।

गोवधन क्या कहा ? जा रहे हैं ? (चारो ओर देखकर) ओ सारा सामान बधा तयार है। (रुआसा होकर) खैर खैर। जानते अग्रेज लोग बडे अच्छे आदमी होते है। खर-खैर चारा ही क्या है। सभी चीज का तो एक न एक अत होता ही है। जब सुनियेगा कि गोवधन का अत हो गया तो मेरी शक्ल याद

कर लीजियेगा और इश्वर से प्रायना के दा शब्द यह दीजियेगा गोवधन पूरा बैल था पर बडा अच्छा आदमी था। अच्छा तो नमस्कार। (भावावेश को नहीं सम्हाल सकता और चला जाता है लेकिन तुरन्त लौट कर दरवाजे से ही कहता है) मेरी लडकी ने आपका नमस्कार कहा है।

[तेजी से प्रस्थान]

सुजाता अब हम लोगा का चलना चाहिए। लेकिन दो की चिंता बनी है। रामनाथ बीमार है। (घडी देखकर) पाच मिनट मे रवाना हाना होगा।

कांति रामनाय अस्पताल भेज दिया गया है। तिनकौडी न सुबह ही उसे भेज दिया।

सुजाता दूसरी चिन्ता उत्पला की है। उसकी आन्त रही है—तडके उठ कर काम म लग जाना। और अब काई काम ही नही है। बिना पानी की मछली की हालत हा गयी है बेचारी की। कितनी दुबली हा गयी है— एकदम पीली। और बेचारी राई भी कितना। (कुछ रुककर) जगन्नाथ चौधरी। तुम तो जानते ही हो कि मैं उसकी शादी तुमसे करना चाहती थी —और लगता भी था कि तुमको यह शादी पसद ही है। (कांति के कान मे कुछ कहती है और तब कांति कल्याणी को इशारा करती है। दोनो चली जाती है) वह तुमको प्यार करती है और तुमको भी वह अच्छी लगती ही है। तो तुम कोई फैसला क्या नही कर लेते। देरी किस बात की ? मेरी समझ मे नही आता।

जगन्नाथ आप ठीक कहती हैं। मेरी भी समझ म नहीं आता। यानी फसला तो कर ही लेना चाहिए। और जानती हैं आपके सामने ही यह फसला हो सकता है। आप चली जायेंगी

तो तो

सुजाता इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। एक मिनट में बात तय हो जायगी। म उसको अभी बुलाती हू।

जगनाथ और मुह मीठा करने के लिए मिठाई भी मौजूद है। अरे आधी मिठाई खतम। (तिनकौडी के खासने की आवाज आती है।) आदमी है या राक्षस।

सुजाता ओह। तुमने मेरा बडा उपकार किया। तिनकौडी। नही, म खुद बुलाती हू। उत्पला ! उत्पला !! एक मिनट के लिए सुन जाना बेटी।

[जगन्नाथ चौधरी की ओर देखकर हसती हुई जाती है और तिनकौडी भी पीछे पीछे जाता है]

जगन्नाथ (घडी देख कर) हू

[दबी हसी नपथ्य स सुनाई दती है और उत्पला आती है। आते ही वह बधे सामान को दखन लगती है। कुछ क्षणो तक सन्नाटा रहता है।]

उत्पला अजब तमाशा है, ढूढते-ढूढते मै थक गयी।

जगन्नाथ क्या, ढूढ रही हो ?

उत्पला सभी सामान मैने खुद सहजा और अब मुझे ही याद नही।

[कुछ क्षणो का फिर सन्नाटा]

जगन्नाथ अ आप अब कहा जायेंगी ?

उत्पला मै ? जो म ,वसन्तपुर के बाबू साहब के यहा जा रही हू। बच्चे को दखने का काम मिल गया है।

जगन्नाथ वसन्तपुर जो यहा से काफी दूर है पचीस-तीस कोस तो होगा ही। यानी इस घर की जिंदगी यही समाप्त।

उत्पला (सामानों के बीच ढूढती हुई) लेकिन कहा रखा होगा आखिर। कही बक्स मे तो बन्द नही कर दिया। ओ हा

इस घर की जिन्दगी आज समाप्त।

जगन्नाथ मैं भी पटना जा रहा हू। वहा काफी काम है। और गदाधर यही रहेगा। उसे मन वहाल कर लिया है।

उत्पला ओ।

जगन्नाथ आपको याद है, पार साल इस समय सर्दी पडने लगी थी। इस साल तो मौसम वडा सुहाना है।

उत्पला नही मुझे कुछ याद नही।

नेपथ्य से [जगन्नाथ चौधरी।]

जगन्नाथ अभी आया। (प्रस्थान।)

[उत्पला फर्श पर धम् से बठ जाती है और सिसक्ती है। सुजाता धीरे से प्रवेश करती है।]

सुजाता ओ। उत्पला, चलने का समय हो गया।

उत्पला (आखें पोछती हुई) जी हा। अम्मा, यदि गाडी छूट गयी तो म आज वसन्तपुर नही पहुच सकूगी।

सुजाता (पुकारती हुई) कान्ति, कोट पहन लो।

[कान्ति, कल्याणी और रणवीर का प्रवश। सभी सफर के लिए तैयार हैं। कल्याणी के हाथ म कुत्ते की जजीर है। गदाधर राम आकर सामानो को झूठमूठ छेड रहा है।]

हा, अब हम लोगो को कूच करना चाहिए।

कान्ति (पुलकित होकर) हा नयी जिन्दगी के लिए।

रणवीर मेरे दोस्तो। आज जब कि इस मकान से सदा के लिए विदा हो रहा हू मेरे दिल का प्याला छलक पडता है। आज मैं अपने को कैसे सम्हाल सकता हू। इस अन्तिम विदा के समय मेरे मन म जो तूफान

कांति मामा

उत्पला मामा

रणवीर वह घोडे का शह मैं चुप रहता हू, एकदम चुप।

[अनिल और जगन्नाथ का प्रवेश।]

अनिल समय हो गया।

जगन्नाथ गदाधर, मेरा कोट।

सुजाता मैं एक क्षण के लिए इस कमरे म बठ लूगी। मुझे ऐसा लगता है मानो इन दीवारो को, इस छत और फश को मैंने पहले कभी देखा ही नही और आज पहली बार देख रही हू।

रणवीर मुझे याद है जब मैं छ वष का था इस खिडकी के पास बैठा था और पिता जी दशहरे की पूजा के लिए स्नान कर सुबह-सुबह इसी पगडडी से लौट रहे थे

सुजाता सब सामान चला गया ?

जगन्नाथ लगता तो है। गदाधर राम ! देखो, सब सामान गया कि नही।

गदाधर जी।

सुजाता हम लोगो के चले जाने के बाद यहा कोई नही रह जायेगा।

जगन्नाथ बस बसत तक।

[उत्पला एक सूटकेस हटा कर कुछ निकालती है। जगन्नाथ चौंक कर पीछे हट जाता है।]

उत्पला क्यों चौधरी जी।

अनिल समय हो गया। गाडी आने म देर नही।

उत्पला अनिल। यह रहा तुम्हारा जूता। छी छी कसा गन्दा है।

अनिल (जूता पहनते हुए) चलिए।

रणवीर (आसुओं को रोकता हुआ) स्टेशन। ट्रेन वह घोडे का शह।

सुजाता हा, चलना ही चाहिए।

जगन्नाथ सभी कोई यहा है न। कोई छूटा ता नही। **(बायीं ओर के दरवाजे मे ताला भरता है)** यहा कुछ सामान पडा है। इस दरवाजे म भी ताला मारना पडेगा।

काति पुराना घर, पुरानी जिन्दगी—अलविदा।

अनिल नई जिन्दगी का स्वागत।

[कान्ति और अनिल जाते है। उत्पला धीरे धीर कमरे को एक बार देख कर सर झुकाए जाती है। तिनकोडी और कल्याणी पीछे-पीछे जाते है।]

जगन्नाथ वसन्त तक के लिए अलविदा। चलिए।

[सभी चले जात हैं। सिफ रणवीर और सुजाता बच रहत है। दोना एक-दूसरे को देखते हैं जसे इसी क्षण की प्रतीक्षा थी। सुजाता सिसक उठती है।]

रणवीर सुजाता। सुजाता।

सुजाता *ओह। मेरा घर, मेरा बगीचा, मेरी दुनिया, मेरी जिन्दगी,* मेरा सुख अलविदा।

काति की आवाज अम्मा।

अनिल की आवाज इन दीवारा, इन खिडकिया को अंतिम बार देख लेने दो। अम्मा को इस कमर म टहलना कितना भाता था।

रणवीर सुजाता।

काति अम्मा।

अनिल चलिए न।

सुजाता आती हू।

[दोनो जान हैं। मच कुछ क्षणो के लिए खाली है। दरवाजा के वन्द होने और गाडिया के रवाना होने की आवाज मुनाई दती है। धीर धीरे सन्नाटा छा जाता है। दूर नेपथ्य मे आम के पेड काटने का शब्द सुनाई पडता है।
धीरे-धीरे एक पगध्वनि मुनाई पडती है। रामनाथ प्रवश करता है। उसने वस्ट-कोट, टोपी और चप्पल पहन रखा है। वह बीमार दीखता हैं।]

रामनाथ (एक एक कर सभी दरवाजो को देखते हुए) ताला बन्द। वे लोग चल गये (बठ जाता है) कोइ बात नही। मैं जरा दम ले लू। भगवान जान मालिक ने पान का डब्बा लिया या नही। (गहरी सास लेता है।) मने देखा नही अवके य लडके (बुदबुदाता है) मेरी जिन्दगी पानी की तरह बह गयी। लगता है कि इस वतन मे कुछ था ही नही। मैं जरा लेट रहू तुम्हारी शक्ति खतम हो गयी हा कुछ नही बचा खाली, एकदम खाली तुम पागल हो। (फश पर चुपचाप लेट जाता है।)

[कुछ क्षणा तक पड कटने की आवाज सुनाई पडती ह और अरर कर एक पेड गिरता ह। पर्दा भी धीरे धीरे गिरता ह]

□□